❀श्रीराम❀

पत्तियां और फूल

स्वामी रामानन्द ब्रह्मचारी

M. A.

पत्तियाँ और फूल

प्रकाशक :—

काशीनाथ

साधना कार्यालय
पो० ग्रा० बीसलपुर
जिला पीलीभीत (यू० पी०)

मूल्य ७५ पैसे

जून १९७२ पंचम संस्करण

मुद्रक :—रामकिशोर अरोरा। किशोर प्रेस, बरेली।

॥ विषय सूची ॥

श्री स्वामी रामानन्द जी
एम॰ ए॰, शास्त्री

॥ भूमिका ॥

(द्वितीय संस्करण)

मित्रों की ओर से मांग हो रही थी एक ऐसे भजन - संग्रह की जिसमें हमारी साधना के अनुकूल पदों तथा भजनों का संकलन हो। श्री त्रिलोकचन्द विश्नोई जी ने 'पत्तियां और फूल' शीर्षक से उसे झांसी से प्रकाशित किया था। उसमें दो बार और पृष्ठ भी जोड़े गये थे उस संस्करण के लगभग समाप्त होने पर नया संस्करण निकाला जा रहा है। भजनों, संकीर्तनों तथा आरती के पदों को ठीक क्रम में रख देने और नया मसाला जोड़ने का प्रयास किया गया हैं। इस विषय पर कुछ समझी हुई बात यहां लिख देना हित करु होगा।

साधना के पथ में चलते चलते कई प्रकार की आन्तरिक प्रतीतिया अनेक प्रकार के भावों को जागृत कर देती हैं। कभी तो समर्पण का भाव इस वेग से उमड़ता है कि व्यक्ति का कण-कण प्रभु का हो जाने के लिये तड़प उठता है। कभी विनय के भाव से आरन हुआ अणु-अणु इसके आगे झुकता चला जाता है और झुकने से अघाता नहीं। कभी मातृ - भावना से ओत-प्रोत साधक समूचे विश्व को उसकी गोद में पाता है। कभी रोम-रोम और विश्व का कण-कण 'राम' नाम के निनाद से गूंजता प्रतीत होता है। कभी विरह की व्यथा व्याकुल कर देती है। ऐसे अवसरों पर भाव के उद्वेग की शान्ति हो पाती है उसे प्रकट करने से। उसके लिये भाषा चाहिये जो भाव के बिलकुल अनुकूल हो और भीतर की लय से पूरा मेल खाती हो। किस सहज रूप से भाव अपने लिये भाषा और लय का निर्माण कर लेते हैं

यह तो साधना करने वालों के अनुभव में आ ही जाता है। अनजाने ही कविता फूट पड़ती है। बिना समझे ही सुरताल प्रकट हो जाते हैं और व्यक्ति का रोम-रोम नाचने लगता है। अन्तर की अनुभूति प्राण के और स्थूल के स्तर में प्रकट होती है। उसका वेग दूसरों को भी कुछ अंशों में वैसे ही अनुभूति करा देता है। सामान्य स्तर से उठा देता है। किसी रूप में प्रभु की सत्ता की प्रतीति होने लगती है।

ऐसी ही परिस्थितियों में भक्तों के उद्‌गार निकले हुये हैं। ऐसी ही वह सामर्थ्य रखते हैं। वह सामान्य कविता के पद नहीं होते। वह तो शक्ति सम्पन्न मंत्र हो जाते हैं जिनमें वे अनुभूतियां निहित रहती हैं। उन्हें भाव से गाने से वह प्रकट हो जाती हैं। प्रारम्भिक अवस्थाओं में जप ध्यान के प्रारम्भ में अथवा अन्त में कुछ पदों का गाना आवश्यक ही समझना चाहिये। भावों को जागृत करने में और निष्ठा को पक्का करने में यह सहायक होता है। ऐसे करते रहने से वह भाव और भी प्रबल हो जाते हैं। जिनको अभी प्रतीतियां नहीं होने लगतीं, जिनको भीतर शुष्क सा प्रतीत होता हैं, उनके लिये तो कीर्तन अनिवार्य ही है। उन्हें तो नियमित रूप से थोड़ा समय देना ही चाहिये। इससे बहुत सहायता मिलेगी। पहिले पहिल कीर्तन में रस नहीं आता, परन्तु धैर्य से करते चले जाने से रस आने लगेगा। प्रभु को समीपता का भी भान होने लग जायेगा।

साधक की स्थिति के साथ ही साथ कीर्तन का स्वरूप भी बदलता जाता है। प्रारम्भिक अवस्थाओं में ऊंचे ऊंचे चिल्लाना, ताली पीटना, सिर आदि हिलाना खूब अच्छा लगता है। आवेश सा भी हो आता है। लोग अपना स्थान छोड़कर नाचने लग जाते हैं, बाजे तबले का जोर का शब्द अच्छा लगता है और उसकी आवश्यकता प्रतीत होती है। परन्तु यह तभी होता है जब शक्ति की गति प्रधान रूप से प्राणमय कोश में होती है। जैसे

जैसे साधक भीतर शान्ति तथा समता का आस्वादन करता चला जाता है, प्राण में शक्ति का वेग समाप्त हो जाता है। भीतर की शान्ति तथा समता वाणी के द्वारा प्रकट होने लगती है। बाजे तबले की आवाज भी अखरने लग जाती है। कीर्तन तथा ध्यान में अन्तर कम हो जाता है। भीतर प्रायः एक सी अवस्था हो जाती है। ऐसे कीर्तन में बैठने से स्वतः ही एकाग्रता होती है और चित्त शान्त होता है। एक उच्च कोटि का ऊपर उठा देने वाला वातावरण बन जाता है। ऊंची देव शक्तियां भी अपनी शक्ति प्रसाद रूप में साधक मण्डल पर बरसा देती हैं। महाशक्ति की कृपा का प्रवाह भी नहला देता है पुकारने वालों को।

भीतर की अवस्था बदलने पर कीर्तन में स्वतः परिवर्तन होता ही है, परन्तु कीर्तन के रूप के बदलने पर भीतर भी परिवर्तन होता है। जितनी शान्ति तथा समता को हम कीर्तन में स्थापित करने की चेष्टा करेंगे उतनी ही वह स्वाभाविक ही भीतर भी प्रकट होने लगेगी। अतः कीर्तन का ऊंचा लक्ष्य सामने रखना चाहिये, आरम्भ से ही।

कीर्तन मनोविनोद के लिये भी किया जाता है और आनन्द के लिये भी किया जाता है। उत्सव रूप भी लोग कीर्तन करते हैं। कोई विरले ही कीर्तन को साधना समझ कर करते हैं। प्रभु का स्मरण जैसे भी किया जाए अच्छा ही है। परन्तु जैसा अच्छा उसकी पवित्रता को समझकर, उसे सजीव पुकार बनाकर, उसे प्रभु-प्राप्ति का साधन समझ कर करना है, वैसा और प्रकार से करना नहीं। प्रभु से मिलने का, प्रभु के सम्मुख अपने भावों को उड़ेल देने का, प्रभु के चरणों में लोट जाने का और उसके नाम की सीढ़ी पर चढ़कर उसके प्रकट संस्पर्श को पाने का प्रकट सिद्ध उपाय है कीर्तन। इसी रूप में साधक को कीर्तन की अपनी साधना में स्थान देना चाहिये।

जप, ध्यान तथा कीर्तन का परस्पर क्या सम्बन्ध है ? जप ध्यान आभ्यान्तरिक साधन × हैं। वह साधन की जान है। उससे तो शक्ति का प्रवाह प्रेरित होता है। कीर्तन प्रेरित होते हुये प्रवाह को प्रवल कर सकता है, उसे फैला सकता है। जब भीतर जागृति मन्द हो रही हो तो भीतर की रोकों को दूर कर सकता है संकीर्तन। जप-ध्यान का अपना मुख्य स्थान है। कीर्तन उसका स्थान नहीं ले सकता। कीर्तन का भी अपना स्थान है। साधक को जप ध्यान के साथ साथ कुछ मिनट संकीर्तन के लिये भी निकाल ने चाहिये (यदि सम्भव हो और भीतर से मांग हो तो)।

कभी कभी ऐसा होने लगता है कि साधक जप-ध्यान के बाद बोलने योग्य ही नहीं रह जाता। मानों होठों पर ताला पड़ा हो। शान्त रहने अथवा आराम करने की प्रेरणा होती है। ऐसी अवस्था में उस प्रेरणा को ही मानना चाहिये और चुप रहना चाहिये। कभी प्रभु का चिन्तन करते ही बोलना असम्भव हो जाता है। ऐसी अवस्था में भी कीर्तन के लिये गुंजाइश नहीं है। उस महाशक्ति के आगे झुक जाना और उसके आदेश को स्वीकार करना ही उचित होता है। भीतर काम करने वाली मां की प्रेरणा ही वास्तविक निर्णायक है।

यह पद-संग्रह विचित्र सा दिखेगा। वास्तव में प्रत्येक पद के पीछे उसका इतिहास है। कब उसकी स्फुरणा हुई, किस आन्तरिक तथा वाह्य परिस्थिति में हुई और हमें कैसे प्राप्त हुआ - ये सभी रोचक कहानियां हैं। पर उनकी चर्चा हमें नहीं करनी है। जिन्हें स्फूर्ति हुई उनके नाम भी देना व्यर्थ होगा। क्योंकि सभी स्फुरणाओं के पीछे तो मां ही रहा करती है। वही

× देखिये अध्यात्मिक साधन खण्ड १—साधना कार्यालय। बीसलपुर। जिला पीलीभीत (यू० पी०)

विभिन्न आन्तरिक प्रतीतियों के रूप में प्रकट होकर वाणी में आ जाती है। और यह किसी की संपत्ति तो है नहीं। जो चाहे इन्हें बरते और अन्तर में वैसी ही भावनाओं को जाग्रत करले। इस जगत में मेरा तेरा कुछ भी नहीं। सभी मय्या का है और उसी के चरणों में 'पत्तियां और फूल' के रूप में अर्पित है—उसकी देन उसी के चरणों में।

आन्तरिक भावनाओं और अवस्थाओं के अनुसार पदों के विषय में हमारी रुचियां बदलती रहती हैं। साधना जिस देश में चल रही होती है वैसी भावनाओं वाले पद प्रिय लगते हैं, भीतर से मेल खाते हैं और अन्तर को जागृत करते हुये चले जाते हैं। मानों भीतर की भूख को पूरा करते हों। ऐसी भूख के लिये यहाँ कई प्रकार का भोजन मिलेगा।

हमारी साधना एक प्रकार के दृष्टिकोण को लेकर चलती है। ये पद उसी से मेल खाते हैं। इसीलिये रुचते भी हैं। इनमें कुछ पद तो वास्तव में उच्च कोटि के मन्त्रों का सा प्रभाव रखते हैं। एक एक पद तन्मय होकर भावना से गाया हुआ वातावरण को बदल सकता है। शक्ति के प्रवाह को बदल देता है। ऐसा ही अनुभव में आया है।

जैसे समय बीतता है, पुराने मित्रों की साधना आगे बढ़ती है, और जैसे जैसे नये मित्र साधना-पथ पर अग्रसर होते हैं, नवीन भावनाओं को प्रकट करते हुये नवीन पद प्रकट होते जाते हैं। हम सभी का स्वागत करते हैं।

'सम्मिलित ध्यान के बारे में' नामक लेख 'हमारी उपासना' नामक पुस्तिका में प्रकट होगा। वह साधकों के लिये स्मरण रखने का विषय है। पदों के संग्रह के लिये कोई वाह्य नियम लागू करना सम्भव प्रतीत नहीं हुआ। ये 'पत्तियां और फूल' भीतर की लटक के अनुसार सजाकर माँ के चरणों में रखे देता हूं।

मैं कई पदों के साथ अपनी भावनाओं के अनुसार खेल कर चुका हूं। कुछ अदल-बदल हुई। लोग अपनी भावना के अनुसार घटायें बढ़ायेंगे। यह भी ठीक ही है। इस भावना के जगत में बन्धन है तो केवल प्रेम का तथा भीतर की सच्चाई का परन्तु और कोई बन्धन हो ही नहीं सकता। इतना जरूर है कि परिवर्तन हो तो भीतर की प्रेरणा से ही हो, लापरवाही से नहीं लापरवाही के कारण पाठ बिगाड़ना भली बात नहीं होती।

मां! इन पत्तियों और फूलों* को स्वीकार कर। इन्हें अपनी प्रसादी बनादे और बांट दे जो तेरे होना चाहते हैं उनमें।

रामानन्द

२१-४-४६

---

* उसके विषय में देखिये साधना कार्यालय का साहित्य।

तृतीय संस्करण की

भूमिका

इस संस्करण में 'पत्तियां और फूल' केवल मात्र पत्तियां और फूल ही रह गई है। और सभी कुछ निकाल दिया गया। सम्मिलत ध्यान आदि के विषय में जो कुछ था वह अलग कर दिया गया है। कुछ मसाला और जोड़ा गया है।

जो मसाला इनमें से निकाला गया उसके साथ उसी विषय पर और उपयोगी मसाला जोड़कर 'हमारी उपासना' के नाम से अलग पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। साधना में नये प्रवेश करने वाले लोगों के लिए वह पुस्तिका विशेष सहायक हो सकेगी। 'पत्तियाँ और फूल' तो सर्व साधारण के लिए लाभकारी हो गई है। साधकों के लिए तो है ही।

पुस्तक का वर्तमान रूप अनेकों की प्रेममयी सेवा का परिणाम है। उनकी सेवा ही उनका पुरस्कार है वही उनका सौभाग्य है। मैं तो चाहता हूं कि साधना कार्यालय के प्रकाशन लोगों के लिए सेवा का सौम्य क्षेत्र बन जायें।

आशा करता हूं कि वर्तमान संस्करण पहिले की अपेक्षा अधिक उपयोगी होगा।

दौराला
१२—२—५१

रामानन्द

× यह भूमिका संक्षिप्त करके दी जा रही।

॥ श्रीराम ॥

प्रकाशक की ओर से

(पांचवे संस्करण के विषय में)

'पत्तियां और फूल' के पहले तीन संस्करण पूज्य स्वामी जी के ही सामने छपे थे। उनकी भूमिका स्वयं उन्होंने ही लिखी थी। इस भजन संग्रह की इतनी अधिक मांग रही कि अब यह पांचवां संस्करण प्रकाशित करना जरूरी हो गया है।

इस संस्करण को अधिकाधिक उपयोगी बनाने हेतु वे सभी भजन व संकीर्तन देने का प्रयास किया गया है जो पूज्य स्वामी जी को प्रिय थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न साधना - कैम्पों में गाए गए तथा साधना-पत्रिका में छपे भजनादि में से भी कुछ इस संग्रह में दिए गए है। माता सुमित्रा जी द्वारा संग्रह किये कुछ भाव भरे गीत भी इसमें दिए गए हैं। अपनी सीमाओं को देखते हुए. न चाहने पर भी हमें कुछ भजनों को छोड़ना पड़ा है। इस प्रकार यह संग्रह पुराने संस्करण की केवल मात्र पुनरावृत्ति नहीं है किन्तु अपने में एक नवीनता लिए हुए है, यद्यपि अधिक सामग्री तो पिछली ही है।

इसकी पाण्डुलिपि बनाने में माता सुमित्रा जी ने बड़ा परिश्रम किया है।

आशा है साधना परिवार को यह संस्करण पहले से अधिक भाव-पूर्ण व उपयोगी लगेगा।

इसके पिछले संस्करण का खर्चा श्री उमादत्त जी लड़ोइया (मेरठ) ने दिया था, उससे प्राप्त होने वाले धन से उनके आभार सहित यह संस्करण छापा जा रहा है।

प्रकाशक

स्मरणीय

इस भजन—संग्रह में 'मां' से भगवान का ही बोध होता है किसी देवी विशेष का नहीं। हमारी साधना में मां, महाशक्ति तथा भगवान में कोई अन्तर नहीं। महाशक्ति प्रभु की ही शक्ति है। वह भगवान ही है। जब उसके मातृत्व का विचार करते हैं तो मां कहते हैं, अन्यथा प्रभु, भगवान, पिता आदि।

× × × × ×

'हमारी साधना' एक प्रकार के दृष्टिकोण को लेकर चलती है। ये पद उसी से मेल खाते हैं।

'गाने में भाव की प्रधानता ही मुख्य रहनी चाहिए। स्वर तथा ताल उसके वाहक हों। बाजों की प्रधानता कभी न होनी चाहिए। वे ऐसे हों कि भजन-संकीर्तन के शब्द तथा भाव ही प्रधान रहें।'

स्वामी रामानन्द

मंगला-चरण

सर्वमंगल मांग्लेय शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोस्तुते ।।

सब मंगल में मंगल रूपे, शिवस्वरूपे।
सब अर्थों की साधक हो तुम जननी रूपे ।।
त्रिनेत्रवती हो, शरण दायिनी।
हे माँ गौरीं, हे नारायणी ।।
तव चरणन में नत यह माथा।
बार बार अभिनत यह माथा ।।

ज्योति जगा दे प्रेम की, मां,
यह हृदय दीपक बनाकर।
सरलता का स्नेह भर दे,
त्याग की बाती बनाकर ।।१।।
ज्योति से तू भस्म कर दे,
वासना का मैल भरा जो।
क्षीण कर दे इस अहम् को,
चेतना अपनी खिला कर ।।२।।
आकर समाजा इस तरह,
बस तू रहे, तू ही रहे जो।
तू दिखे, तू ही दिखे सब,
सब जगह सब कुछ घटे जो ।।३।।

गुरु - वन्दना

जो दिखाता पन्थ प्यारा,
मार्ग का बन जो उजाला।
जिससे प्रेमक-दीप बाला,
बन गया है जो सहारा।।
उसके चरण में झुक रहा है,
भाव से यह सिर हमारा ॥१॥

मां का पावन प्रेम पाकर,
माँ-चरण में सिर नवाकर।
अपना आपा सब गंवाकर,
शक्ति को जिसने पसारा ॥
उनके चरण में झुक रहा है,
भाव से यह सिर हमारा ॥२॥

माँ के चरण में लोटना जिसने सिखाया,
सर्वस्व-अर्पण पाठ है जिसने पढ़ाया।
चिन्ता रहित जिस प्रेम ने हमको बनाया,
हमको माता की अमर गोदी बिठाया।
उसके चरण में झुक रहा,
भाव से यह सिर हमारा ।३।

आवाहन मन्त्र

परमात्म् देव श्री राम !
तू परम शुद्ध, बुद्ध, नित्य, सर्वशक्तिमान,
सच्चिदानन्द स्वरूप, ज्योतिर्मय, एकमेव
अद्वितीय परमेश्वर है। तू परम पुरुष,
दयालु, देवाधिदेव है,
तुझे नमस्कार हो !
बार-बार नमस्कार हो !! बार-बार नमस्कार हो !!!

नमस्कार सप्तक

करता हूँ मैं बन्दना, नत शिर बारम्बार।
तुझे देव ! परमात्मन् ! मंगल-शिव-शुभकार ॥१॥
अंजलि पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ।
नमस्कार मेरा तुझे होवे जग के नाथ ॥२॥
दोनों कर को जोडकर, मस्तक घुटने टेक।
तुझको हो प्रणाम मम, शत-शत कोटि अनेक ॥३॥
पाप-हरण मंगल करण, चरण-शरण का ध्यान।
धार करूं प्रणाम मैं, तुझको शक्ति निधान ॥४॥
भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर।
श्रद्धा से तुझको नमूं, मेरे राम हुजूर ॥५॥
ज्योतिर्मय जगदीश हे ! तेजोमय अपार।
परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार ॥६॥
सत्य-ज्ञान-आनन्दमय, परम धाम श्री राम।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम ॥७॥

दयामय मंगल-मन्दिर खोलो !

जीवन-पथ अति दुष्कर स्वामी, द्वार पड़ी हूं तोरे।
आश्रित जन हूं आश्रय दीजै, यही कामना मोरे॥
नाम मधुर तब रटूं निरन्तर, शिशु संग प्रेम से बोलो।
दिव्य-तृषातुर आयो बालक, प्रेम मधुर रस घोलो॥

मातृ-वन्दना

हम बालक तुम माय हमारी,
पल पल माहि करो रखवारी। हम०

विषय ओर जावन नहिं देवो,
दुरि दुरि जाऊं तो गहि गहि लेवो।
निशि दिन गोदी ही में राखो,
इत उत वचन चितावन भाखो॥१॥हम०

मैं अनजान कछू नहीं जानों,
बुरी भली को नहीं पहचानों।
जैसा तैसा तुमही चीन्हेव,
गुरु ह्वै ध्यान खिलौना दीन्हेव॥२॥हम०

दृष्टि तिहारी ऊपर मेरे,
सदा रहूं मैं सरनै तेरे।
इच्छा तिहारी ही से जीऊं,
नाम तुम्हारो अमृत पीऊं॥३॥हम०

मारो झिड़को तो नहिं जाऊं,
सरक सरक तुमही पै आऊं।
चरनदास है 'सहजो' दासी.
हो रक्षक पूरण अविनाशी॥४॥हम०

ऐ मम साधन की आधार !
तेजपुंज तू शक्तिमयी, विद्युन्मयी नव स्फूर्तिमती है।
प्रेम पूर्ण तू ज्योतिर्मयी माँ ! स्नेह स्रवित शुभ अंगवती मां।
है तू प्रेम-कृपा-आगार।
ऐ मम साधन की आधार।१।

भाव-तरणी आरूढ़ हुआ मैं, प्रेमवेग परिपूर्ण हुआ मैं,
चल,उड़ चलकर, तर जाऊंगा, लोक-लोकान्तर पर जाऊंगा,
हो जाऊं मानस अम्बर से पार,
ऐ मम साधन की आधार।२।

बाल-भाव में उठते लखकर. प्रेम-भार से पुलकित पाकर,
रोम रोम में रंजित तन से. वत्सलता के आलिंगन से,
आ जाती तू करने उद्धार।
ऐ मम साधन की आधार।३।

प्रेम-वारि तव चिन्मय प्यारी, झर झर बरो मधुमय न्यारी,
ओत-प्रोत कण कण का करके, अणु अणु मम उन्मीलित करके,
जाय समाती मंगल-आगार।
ऐ मम साधन की आगार।४।

मात ! दया सब तेरी तेरी, अतुल कृपा सब तेरी तेरी,
मैं तब छोटा बालक हूँ मां। कृपा-वारि से पालित हूं मां।
चरण शरण का इच्छुक हूँ क्या, चरण शरण तो है ही तेरी।
ऐ मम जीवन की आधार।
ऐ मम साधन की आधार।

दे माँ ! निज चरणों का प्यार।
पूर्ण प्रेम दे, अमर स्नेह दे,
अविरल भक्ति एक ध्येय दे।
पूजा करूं सदा मैं तेरी,
दे मां ! अटल भक्ति उपहार ॥१॥ दे माँ०
तुझको जानूं, तुझको मानूं,
तुझ पर ही निज जीवन वारूं।
ध्यान रहे तेरा ही निशि दिन,
दे मां ! सुमिरण का आधार।२॥ दे मां०
हृदय अभीप्सा से जागृत हो,
वरद-हस्त मेरे सिर पर हो
दिव्य प्रेम से ओत-प्रोत हो,
यह जीवन का पारावार ॥३॥ दे मां०

मेरा स्वीकार समर्पण हो माँ !
बना मुझको अपना, करूं तेरी सेवा,
तुम्हारे ही चरणों का इक प्यार हो मां।
मेरे कष्ट सारे हैं कल्याण के द्वार,
मेरी प्रेम वीणा का यह तार हो मां !
तू है शुद्ध निर्मल, तू है प्रेम आगार,
हर एक श्वांस में ये ही झंकार हो मां !
तेरे प्रेम में कर दूं उत्सर्ग जीवन,
यह जीवन का जीवन में ही सार हो मां !
जिऊं तेरी खातिर, मरना भी यूं हो,
मेरा सीस चरणों पे न्योछार हो मां !

हर स्वर मेरा झंकार करे, हर श्वांस मेरा उच्चार करे,
मेरा हर रोम पुकार करे.
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, माँ !
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, मां !
मन मृदंग के सब तालों में हृद्-तन्त्रीं के सब तारों में,
ध्वनि एक यही गुंजार करे,
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, मां !
मैं तेरा मां ! मैं तेरा. मां !
जीवन के शरद्, वसन्तों में गर्मी, जल, शिशिर, हेमन्तों में !
हृद्-कुंज में कोयल कूक करे,
मैं तेरा, माँ ! मैं तेरा, मां !
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, माँ !
आवेदन चरणों में मेरा, टूटे माँ सीमा का घेरा !
पुलकित हो सकल पुकार करे.
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, मां !
मैं तेरा, मां ! मैं तेरा, मां !

मां ! तू प्रेम सुधा बरसादे।
बूंद बूंद से सूखी कलियां मन की आज खिला दे ।। मां तू—
ओत प्रोत हो जीवन धारा, तेरे दिव्य मिलन के द्वारा।
पल पल छिन छिन वत्सलता से अमृत रस बरसा दे ।। मां तू—
दिव्य कर्म में, दिव्य वचन में, मन मानस के कुंज-पुंज में।
सौरभ बन कर प्रेममयी मां ! एक बार मुसका दे ।। मां तू—
स्नेहामृत का पेय पिला दे, जीवन को आनन्द बना दे।
उर अन्तर की अमर ज्योति में, अपनो छवि दरसा दे ।। मां तू—

चरण गहि बिनवौं कर जोरी,
देहु मात अमृत रस बोरी।
स्वजन उबारन नाम तिहारी,
कीरति छाय रहि चहु ओरी॥

कृपा पन्थ निरखत निशि वासर,
चरण कमल बैठो चित्त जोरी।
जनम अनेक भ्रमत भये माता,
विपदा सही नही कुछ थोरी॥

मोपर मातु कृपा कर दीजै,
चरण पड़ा वालक यह तोरी॥

करुणामय, करुणा की वृष्टि कर दो।
व्याकुल खिन्न हृदय को प्रेम अमिय से भर दो॥
कण कण में माता बस कर. जन-मन को उज्जवल कर दो।
मम मन को निर्मल कर दो, अन्तर को विकसित कर दो॥

मइया बरस बरस रस बारी!
बूंद बूंद पर तेरे जल की, जाऊँ मैं बलिहारी।
नदी सरोवर सागर बरसे, लागी झड़ियां भारी॥
मेरे अंगना भी तू बरसे, अतुल कृपा उर धारी।
तू बरसे मैं जी भर नहाऊ, रोम रोम तव वारी।
सौम्य रूप में लय हो जाऊं, अपना आप बिसारो।

प्रेम की ज्योति जगादे मां ! मम हृद्मन्दिर में।
प्रेमप्रसून खिलादे माँ ! मम अन्तस्तल में ॥
उज्जवल रूप दिखादे मां ! मम हृद्मन्दिर में।
कृपा वारि बरसादे मां ! मेरे कण कण में ॥

मां ! तव चरनन मैं सीस नवाऊं !

कुछ न रहे मां मैं और मेरा, सब तेरा हो जाये।
इच्छाओं का जगत यह मेरा, मिट्टी में मिल जाये ॥
केवल तेरी ही इच्छा का यन्त्र बनी मुस्काऊ
मां ! तव चरनन ...

प्यार करूं तेरी जगती से, पल छिन तुझे निहारूं
प्यार करे कोई पत्थर मारे, हृदय भेद नहीं धारूं
घट घट आप विराजे मैया उस पर बलि बलि जाऊं
मां ! तब चरनन ...

विनय करूं तेरे चरणों में, हिय में भर दे शक्ति।
ज्ञान का दीप जगे घट भीतर विकसे सच्ची भक्ति ॥
अमर ज्योति में अमर दर्श पा, जीवन सफल बनाऊं
मां ! तब चरनन ...

तोड़ दे बन्धन मोह माया के मैं स्वतन्त्र बन जाऊं।
नाचूं, कूदूं, मौज उड़ाऊं, चिन्ता सकल मिटाऊं ॥
हो निश्चिन्त सकल विध मैया, तुझ में ही रम जाऊं।
मां ! तब चरनन ...

चरणों में मस्तक झुका जा रहा है।
समर्पण समर्पण किये जा रहा है॥

मां ! सत्य क्या है इसे तू ही जाने।
नहीं जानता क्यों नमा जा रहा है॥

मैं इतना ही जानूं तू है मात मेरी।
खिला अपनी गोदी में मन चाह रहा है॥

न हृदय में शक्ति, न वाणी में ताकत।
तेरा गान फिर भी हुये जा रहा है॥

न बल है न बुद्धि, न शक्ति न भक्ति।
जो देने को है तू दिये जा रहा है॥

यह मस्तक यह हृदय यह कण कण है तेरा।
इन्हें शुद्ध करके, नमे जा रहा है॥

यह जीवन भी मेरा सभी के लिये हो।
मिटा अहं मेरा बढ़ा जा रहा है॥

कवि हूँ न गायक न शायर हि हूं मैं।
हृदय भावना से, जग जा रहा है॥

तू भक्तों का प्यारा, तुझे भक्त प्यारे।
अपना ले मुझे, ये रुला जा रहा है॥

सुना पतित-पावन प्रभु नाम तेरा।
पतित को उठा, ठोकरे खा रहा है॥

मेरा जीना मरना भी, हो तेरी खातिर।
तमन्ना यह सेवक किये जा रहा है॥

मां ! शरण तिहारी आया हूँ, तू अपना दास बना ले।
बल बुद्धि हीन मैया मैं,
है बीच भंवर मोरी नैया,
नहिं दूजा कोई खेवैय्या, मां ! तू ही लाज बचाले ॥
है पांच चोर संग लागे,
नहिं मस्त पहरुआ जागे,
अब प्राण बचत नहिं, भागे माँ ! इनसे वेगि बचाले ॥
एक ठगनिहुँ जाल बिछावे
नित नूतन दांब चलावै,
नहिं चैन लेन जी पावै, मां अपनी गोद उठा ले।
नहिं मांगौं मधुर मिठाई,
धन, धाम न दे मोहे माई,
रख 'रामशरण' शरणाई, माँ ! हिय सों मोहिं लगाले ॥

मां अपनी शरण बुला लेना, हम तेरे ही गुण गावें।
मैं अबोध अज्ञान वालिका, तुझको कैसे पावें ॥
निशिदिन तेरा घ्यान धरें, औ तुझको न विसरावे।
मां ऐसी लगन लगा देना हम तुझको भूल न पावें ॥ माँ अपनी ॥
दया दृष्टि मां मुझ पर कर दो करुणा से झोली भर दो।
तन मन मेरा निर्मल कर दो, कण कण मम पुलकित कर दो ॥
मां इतनी विनती सुन लेना, मेरा रोम रोम खिल जावें। मां ॥
जो कुछ है सो तेरा दाता, मेरा अपना कुछ नहीं माता।
सब कुछ ही तेरे चरणों में, श्रद्धा से अर्पण सब माता ॥
मां मन मन्दिर में बस जाना, हम तुझ में ही रम जावें। मां ॥
'राधा' कब से पथ निहारे, कर जोड़े तेरे द्वार खड़ी।
अब तो गले लगा लो मां, अपनी गोद बिठालो मां ॥
मां ऐसी कृपा कर देना, मेरा हृदय दीप जग जावें। माँ... ॥

कबीर

साधो, सहज समाधि भली !
गुरु प्रताप जा दिन ते जागी।
दिन दिन अधिक चली ॥
जहं जहं डोलौं सो परिकरमा,
जो कुछ करौं सो सेवा।
जब सोवौं तव करौं दण्डवत,
पूजौं और न देवा ॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सिमरन,
खांव पिवो सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं,
भाव मिटावौं दूजा ॥
आँख न मूंदौ, कान न रूधों,
तनिक कष्ट नहीं धारों।
खुलै नैन पहिचानौं हंसि हंसि,
सुन्दर रूप निहारौं ॥
सबद निरन्तर सो मन लागा,
मलिन वासना त्यागो।
ऊठत बैठत कवहुँ न छूटै,
ऐसी तारी लागी ॥
कह कबीर यह उनमनी रहनी,
सो परगट कर गाई।
दुःख सुख ते कोई परे परमपद,
तहि पद रहा समाई ॥

घूंघट के पट खोल री।
तो को पीव मिलेंगे, घूंघट के पट खोल री।
घट घट रमता सांई मेरा कटुक वचन मत बोल री॥
धन, जोवन का गर्व न कीजै, झूठा पचरंग चोल री।
सुन्न महल में दियरा बारि ले आसन सो मत डोल री॥
जाग जुगत सो रंग महल में पिय पायो अनमोल री।
कहत कबीर, सुनो भाई साधो अनहद बाजत ढोल री॥

मन मस्त हुआ तब क्यों बोलै!
हीरा पायो गांठ गठियायो, बार बार बाको क्यों खोलै।
हल्की थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोलै॥
सुरत कलारी भई मतवारी। मदवा पी गई बिन तोलै।
हंसा पाई मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोलै॥
तेरा साहिब है घट माही, बहार नैना क्यों खोलै।
कहे कबीर, सुनो भई साधो, साहिब मिल गये तिल ओले॥

सूरदास

वन्दौं चरण कमल हरिराई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई।
बहिरो सुनै मूक पुनि बोले, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बार बार बंदौ तिहिं पाई॥
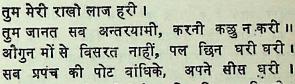
तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरयामी, करनी कछु न करी॥
औगुन मों से बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बांधिके, अपने सीस धरी।
दारा सुत धन मोह लिये हैं, सुधि बुधि सब बिसरी।
'सूर' पतित को वेग उबारो, अब मेरी नाव भरी॥

कहा कमी जाके राम धनी।
मनसा नाथ मनोरथ पूरन, सुख निधान जाको मौज धनी॥
अर्थ, धर्म अरु काम, मोक्ष-फल, चारि पदार्थ देत गनी।
इन्द्र समान हैं जाके सेवक, नर बपुरे की कहा गनी॥
कहा कृपिन कीं माया गनियै, करत फिरत अपनी अपनी।
खाइ न सकै खरचि नहिं जानै, ज्यों भुजंग सिर रहत मनी॥
आनन्द मगन राम राम गुन गावैं,दुःख सन्ताप की काटि तनी।
'सूर' कहत जे भजत राम कौं तिनसौं हरि सौं सदा बनी॥

जैसे राखहु तैसै रहौं।
जानत हौं दुख–सुख सब जन के, मुख करि कहा कहौं॥
कवहुँक भोजन लहौं कृपानिधि, कवहुंक भूख सहौं।
कबहुँक चढ़ौ तुरंग महागज, कवहुँक भार वहौं॥
कमल-नयन, घन-स्याम मनोहर, अनुचर भयौ रहौं।
सूरदास-प्रभु भक्त-कृपानिधि, तुम्हरे चरन गहौं।'

तुम तजि और कौन पै जाऊं।
काकैं द्वार जाय सिर नाऊं पर हाथ वहाँ विकाऊं।
ऐसौ को दाता हे समरथ, जाके दिये अघाऊं।
अंतकाल तुम्हरो सुमिरन गति अनत कहूं नहीं जाऊं।
रंक सुदामा कियो अजाची दियो अभय पद ठाऊं।
कामधेनु चिन्तामनि दीन्हौ, कल्पवृक्ष तर छाऊं।
भव-समुद्र अति देखि भयानक, मन मैं अधिक डराऊं।
कीजै कृपा सुमिरि अपनौ प्रन, सूरदास बलि जाऊं।

अब मोहिं सरन राखिए नाथ।
कृपा करी जो गुरुजन पठए, वह्यो जात गह्यो हाथ॥
अहंभाव ते तुम विसराए, इतनेहिं छूट्यो साथ।
भवसागर मैं परयौ प्रकृति बस, बांध्यो फिरयो अनाथ॥
भ्रमित भयौं, जैसे मृग चितवत, देखि देखि भ्रम-पाथ।
जनम न लख्यो संत की संगति, कह्यो-सुन्यो गुन-गाथ॥
कर्म, धर्म, तीरथ विन राधन, ह्वै गए सकल अकाथ॥
अभय दान दै, अपनौ कर धरि सूरदास के माथ॥

नानक

मैं नाहीं प्रभु ! सब कुछ तेरा।
सब कुछ तेरा साँइयाँ, सब कुछ तेरा ।
इंगे निरगुण, उंगे सरगुण, केलि करत बिच स्वामी मेरा ।
आपो राजन, आपी राया, कहिं कहिं ठाकुर कहिं कहिं चेरा ।
नगर में आप बाहिर पुनि आपहि, प्रभु मेरे का सगल बसेरा ।
कैसों दुराऊँ, कैसों बलबंचा, जैं जैं पेखूं तैं सो नेरा ।
साधु मूरत भेंट्यो 'गुरु नानक' मिल सागर बूंद नहीं अनहेरा ।

— · ——

सुमिरन कर ले मेरे मनाँ, तेरी बीती उमर हरि नाम विना ।
पंछी पंख बिन, हस्ती दंत बिन, नारी पुरुष बिना ।
वैश्या पुत्र, पिता बिन हीना, तैसे जन हरि नाम बिना ।
सुमिरन कर ले मेरे मना तरी वीती उमर हरिनाम विना ।
कूप नीर बिन, धनु क्षीर बिन, मन्दिर दीप बिना ।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ।
सुमिरन कर ले मेरे मनाँ तेरी बीती उमर हरि नाम बिना ।
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिना ।
जैसे पंडित वेद-विहीना, तैसे जन हरि नाम बिना ।
सुमिरन कर ले मेरे मनां, तेरी वीती उमर हरि नाम बिना ।
काम-क्रोध, मद, लोभ निवारो छोड़ विरोध तू सन्त जनाँ ।
नानक कहे सुनो भगवंता या जग में नहीं कोई अपना ।
सुमिरन कर ले मेरे मनाँ तेरी बीती उमर हरि नाम बिना ।

तुम शरणाई आयो ठाकुर,
तुम शरणाई आयो जी।
उतर गयो मेरे मन का संशय, जब तेरो दर्शन पायो जी।
अनबोलत मेरी बिरथा जानी, अपना नाम जपायो जी
दुःख नाठे सुख सहज समाये, अनन्द अनन्द गुण गायो जी।
कह नानक गुरु बन्धन काटे, बिछुरत आन मिलायो जी।

तुलसीदास

राम जपु, राम जपु राम जपु बावरे।
घोर भव-नीर-निधि नाम निज नावरे।
एक ही साधन सब सिद्धि सिद्धि साधि रे।
ग्रसे कलिरोग जोग संजम समाधि रे।
भलो जो हैं, पोच जो है दाहिनो जो वाम रे।
राम-नाम ही सों अन्त सब ही को काम रे।
जग नभ-वाटिका रही है फलि-फूलि रे।
धुवाँ कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे।
राम-नाम छाँड़ि जो भरोसा करौ और रे।
'तुलसी' परोसे त्यागि माँगे कूर कौर रे

जांऊ कहाँ तजि चरण तिहारे।
काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे।
कौने देव बराई-बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे।
खग मृग व्याध पषान विटप जड़, यवन कवन सुर तारे।
व, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया बिवस विचारे।
तिनके हाथ 'दास तुलसी' प्रभु! कहा अपनपौ हारे।

यह विनती रघुबीर गुसाईं।
और आस विश्वास भरोसो, हरौ जीव-जड़ताई।
चहौं न सुगति, सुमति, सम्पत्ति कछु, रिधि, सिधि, विपुल बड़ाई।
हेतु रहित अनुराग राम–पद, बढ़हु अनुदिन अधिकाई।
कुटिल करम लै जाई मोहिं, जहँ जहँ अपनी बरियाई।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छांड़िये कमठ अंड की नाईं।
यहि जग में जहँ लगि या तनु की प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब 'तुलसीदास' प्रभु ही सों, होहिं सिमटि इक ठाईं।

रघुवर तुमको मेरी लाज।
सदा सदा मैं सरन तिहारी, तुम बड़े गरीब निवाज।
पतित-उधारन विरद तिहारो, श्रवनन सुनी अवाज
हौं तौ पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज।
अध-खंडन दुःख-भंजन जन के, यही तिहारो काज
'तुलसीदास' पै किरपा करिये, भक्ति-दान देहु आज।

—

ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं।
जो गति जोग विराग जतन करि, नहीं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जीय जानी।
जो सम्पति दससीस अरपि करि, रावन शिव पहँ लीन्हीं।
सो सम्पदा विभीषन कहँ अति, सकुच सहित हरि दीन्हीं।
'तुलसीदास' सब भाँति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करहिं कृपानिधि तेरो

मैं हरि, पतित पावन सुने ।
मैं पतित, तुम पतित पावन, दोउ बानक बने ।
ब्याध गनिका गज अजामिल, साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे, जात कापै गने ।
जानि नाम अजानि लीन्हें, नरक जमपुर मने ।
'दास तुलसी' सरन आयो, राखिये अपने ।

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिकारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-कुन्ज-हारी ।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो सो ।
मो समान आरत नाहिं, आरतिहर तो सो ।
ब्रह्म तू है जीव हौं, तू ठाकुर, हौं चेरो ।
तात, मात, गुरु, सखा तू, सब विधि हित मेरो ।
तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै ।
ज्यों-त्यों 'तुलसी' कृपालु, चरन-सरन पावै ।

मीरा

मन रे परस हरि के चरन ।
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरन ।
जे चरन प्रह्लाद परसे, इन्द्र-पदवी-धरन ।
जिन चरन ध्रुव अटल कीन्हों, राखि अपनी शरण ।
जिन चरन ब्रह्मांड भेंट्यो, नख शिखा हाथी मरन ।
जिन चरण प्रभु परसि लीन्हें, तारी गौतम-धरन ।
जिन चरन कालीय नाथ्यो, गोप लीला करन ।
जिन चरन धारयो गोवरधन, गरब मघवा हरन ।
दासि 'मीरा' लाल गिरधर, अगम तारन तरन ।

कोई कहियो रे प्रभु आवन की
प्रभु आवन की मन भावन की
आप न आवैं लिख नहीं भेजें, वान पड़ी ललचावन की
ये दोऊ नैन कहा नहिं मानैं, नदियां बहै जैसे सावन की
कहा करूं कछु बस नहीं सजनी, पंख नहीं उड़ जावन की
'मीरा' के प्रभु कबर मिलोगे, चेरी भई तोरे दामन की

मैं तो गिरधर के घर जाऊं
गिरधर तुम्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊं
रैन पड़े तब ही उठि जाऊं, भोर भये उठि आऊं।
रैन दिना बाके संग खेलूं, ज्यों त्यों ताहि रिझाऊं।
जो पहिरावे सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं।
म्हारी उनकी प्रीति पुरानी, उन बिन पल न रहाऊं।
जहां बैठावे तितहीं बैठूं, बेचै तो बिक जाऊं।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, बार बार बलि जाऊं।

प्यारे दर्शन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय।
जल बिनु कमल, चन्द्र बिनु रजनी,
ऐसे तुम देख्यो बिन सजनी
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजो खाय।
दिवस नहीं भूख, नींद नहीं रैना,
मुख सूं कहत आवे नहिं बैना
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, मिलकर तपत बुझाय।
क्यों तरसावो अन्तरयामी,
आन मिलो किरपा कर स्वामी
'मीरा' दासी जन्म जन्म की, पड़ी तुम्हारे पांय।

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक-कटोरे अमृत भरयो, पीवत कौन नटै रे।
'मीरा' कहे प्रभु हरि अविनासी तन मन ताहि पटै रे।

सांवरिया, मैं तो शरण तिहारी।
नहीं बुद्धि बल, बचन—चातुरी,
एक भरोसो चरन गिरधारी।
कड़वी तुम्बरिया मैं तो नीच भूमि की,
गुण-सागर पिया तुम ही संवारी।
मैं अनजान बालक तब शरणें,
नाथ ! न दींजो अनाथ बिसारी।
निज जन जानि सम्भारोगे, प्रियतम-
प्रेम-सखी निज जाऊं बलिहारी।

म्हारे घर आवो प्रीतम प्यारा।
तन मन धन सब भेंट करूंगी, भजन करूंगी तुम्हारा।
तुम साहिब गुनवन्ता कहिए, मो में अवगुन सारा।
म्हारे घर आवो...

मैं निर्गुणिया, गुण नहीं जानूं, तुम हो बकसन हारा।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, तुम बिन नैन दुखारा।
म्हारे घर आवो...

हरी मेरे जीवन प्रान-अधार
और आसरो नाहीं तुम बिन तीनूं लोक मंझार।
आप बिना मोहि कछु न सुहावै निरख्यों सब संसार।
'मीरा' कहै मैं दास रावरी दीज्यौ मती बिसार।

******

म्हारे जनम मरण रा साथी, नहिं बिसरूं दिन राती।
थाँ देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मोरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अंखियां राती। १
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती।
दोऊ कर जोड्यां अरज करूं छूं, सुण लीज्यो मेरी बाती। २
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों मदमातो हाथी।
सतगुर हाथ धरयो सिर ऊपर, आँकुस दै समझाती। ३
पल-पल पिव को रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, हरि चरणों चित राती। ४

राम शरण

मनका राम नाम का फेर।
हिय हुलसत मन मोद बढ़त अति, छीन होत अघ ढेर।
अनुपम मधुर सुखद हरि चिन्तन काटत कष्ट घनेर।
राम नाम की सुन्दर तरनी, तारत रंक कुबेर।
ठग ठाकुर नर नारि कुचाली, जे ध्यावहिं ह्वै चेर।
अपनो आपा खोय भली बिधि, सब में रामहिं हेर।
राम नाम की मधुर मधुर ध्वनि, स्वाँस स्वाँस में टेर।
सद्गुरु शरण सुलभ करि दासहिं, मेट्यो मन को फेर।
'रामशरण' विश्वास भयो अब, प्रभु करिहैं भव तेरा।

———

राम ! रम जा हमारे तन मन में ।
हौं सेवक तेरो तू स्वामी, आन परयो तव चरनन में ।
राखत लाज शरण आये की, भनक परी अस श्रवनन में ।
चहौं न सुख सम्पति वैभव कछु, मन रत हो तव सुमिरन में ।
'रामशरण' बिनवति कर जोरे, बसि जा मोरे कन कन में ।

अन्तरयामी, शरण तिहारे परी ।
तुम जानत सब हिय की मेरे, करनी कछु न करी ।
कैसे विनय सुनावहुँ स्वामी, औगुन की गठरी ।
द्वार द्वार भटकिऊं अब लौं बहु, कोउ न बांह धरी ।
और ठौर सूझति नहि मोको, तुम लग दौर मेरी ।
अशरण-शरण विरद तव स्वामी, कीरति अस बगरी ।
जब तें भनक परी श्रवनन अस, संसय सकल टरी ।
'रामशरण' तव चरण परी हौं नैनन लागि झरी ।
निज जन जानि बानि गुनि आपनि, राखहु शरन हरी

रमौ मम रोम रोम में राम ।
मन मंदिर तुम बिनु सूनो है, सूनो है हिय धाम ।
रैन न चैन भूख नहिं वासर, चोला है बेकाम ।
दीन मीन जस जल बिनु तलफति, मनि बिनु नाग निकाम ।
तस गति कुगति भई अब मोरी, तुम बिनु हे 'श्री राम' ।
भ्रम भ्रम अधम जोनि गति भुगती, पार न पायों राम ।
कोटिन जतन करत जुग बीते, नाहिं लह्यों विश्राम ।
बुद्धि बल सकल सिरान हमारो, नेकु परयो नहिं काम ।
'रामशरण' पायन परि विनवति, हिये बसौ सुखधाम ।

मन तू हिय हरि चरण धरै।
सब सुखनिधि पावन हरि पद तजि, काहे कूप परै।
काम धेनु तजि दुहत मदारन, पय की आस करै॥
सुचि सुरसरि तट वस निसिवासर, प्यासन मूढ मरै।
कंचन करते डारि अभागे, कांच किरच पकरै॥
सांची समुझि विफल मृगत्रिषना, चहु दिसि भजत फिरै।
नैक न हाथ लग्यो अवलों कछु, तबहुँ न ग्लानि गरें॥
भूलि सकारे सायं समय जो, आवै लौट घरै।
"रामशरण" ताकी नहिं विगरी, जो हिय हरिहि डरै॥

नाम जप ले हरी का मेरी रसना।
राम नाम रस मधुर पान करु तजि षटरस का सुख सपना।
पैहउ परम सांति सुख सहजहिं तीनि ताप को मिटि तपना॥
नामहिं के बल लह्यो परम पद अजामीलि गनिका सदना।
रामसरन अस समुझि नाम जपि जनमु सफल करि ले अपना॥

प्रभु चरनन पै बलि बलि जाऊँ।
मैं दुखिया कछु पास न मोरे का तव भेट चढ़ाऊँ।
जो कछु है सब देन तुम्हारी अरपन करत लजाऊँ॥
परम अपावन पतित सदा को परसत पद सकुचाऊँ।
दूरिहि ते लहि लाहू दरस को सादर सीस नवाऊँ॥
भक्ति भाव को भेद न जानउं केहि विधि विनय सुनाऊँ।
पद रज परी द्वार पं तेरे सिर धरि अति हरषाऊँ॥
'राम सरन' सेवक तू स्वामी सेवा करि न अघाऊँ।
निबैह पावन नाम सदा यह जनम जहाँ जहाँ पाऊँ॥

मातु मोहिं लीजौ गोद उठाय।
मैं अबोध बालक अनाथ अति दीन हीन असहाय।
इत उत भटकत फिरहुँ जगत में कोउ न करति सहाय ।।
जस कछु भलो बुरो हौ तेरौ तू है मेरी माय।
आय सम्हारहु सपदि नाहिं तौ जनमु अकारथ जाय ।।
सहत अमित संताप निरन्तर अब हौं गयों अघाय।
कहा करौं कछु समुझि परति नहिं रहि रहि जिय अकुलाय ।।
आयसु तोरि अवसि अब मनिहौं करिहौं नहिं अटपाय।
'रामसरन' कहं हिये लगावहु सब अपराध भुलाय ।।

राम रंगीले अन्य भक्त

यों निबहै जन सेवक तेरा।
ऐसी दया करि साहिब मेरा ।।
ज्यूँ हम तोरें, त्यूँ तू जोरै।
हम तोरें पै, तू नहिं तोरै ।।
हम बिसरैं, त्यूँ तू न बिसारै।
हम बिगरैं, पै तू न बिगारै ।।
हम भूलें तू आन मिलावै।
हम बिछुरैं तू अंग लगावै ।।
तू भावै सो हम में नाहीं।
'दादू' दरसन देहुँ गुसांई ।।

अब हौं कासों बैर करौं ।
कहत पुकारत प्रभु निज मुख तें, घटघट हौं बिहरौं ॥
आपु समान सर्व जग लेखौं भक्तन अधिक डरौं ।
'श्री हरिदास' कृपा तें हरि की, नित निर्भय विचरौं ॥

तेरी प्रतिमा मन मन्दिर में,
तेरी स्तुति गीत अधर में है ।
तेरा ही ध्यान विचारों में,
तेरी माला मम कर में है ॥
तू आदि देव परमेश्वर है,
तू अन्तक रुद्र भयंकर है ।
तू रजनी में व्याप्त रहा,
तू प्रकट दिवाकर कर में है ॥
तेरी महिमा पग पग में है,
तेरी गरिमा मग मग पर है ।
तू कुंजों में, तू फूलों में,
तू प्रतिबिम्बित सागर में है ॥
तेरी प्रतिमा तारों में है,
तेरी ही दीप्ति सुधाकर है ।
तू मातृ स्नेह में अमृत है,
तेरा ही नृत्य समर में है ॥ तेरी

तेरी देन, तेरी भेंट चढ़ाऊँ।
देना चाहूँ विधि नहीं जानूँ,
मैं तेरा तेरा गाऊँ॥
जो लेना चाहे ले ले,
जो देना चाहे दे दे,
हंसी हंसी में देवूँ जो तू लेवे,
हंसी हंसी में लेवूँ जो तू देवे,॥
तेरी देन तेरी भेंट चढ़ाऊं।
जो देवूँ मैं तुझको देवूँ,
जो लेवूँ मैं तुझसे लेवूँ,
सब कुछ ही मैं तेरा मानूँ,
अपने को मैं तेरा जानूँ,
तेरी देन तेरी भेंट चढ़ाऊ,

भगवन् मेरा सहारा तेरे सिवा नहीं है।
आधार एक तू है, बस दूसरा नहीं है॥

तू बाप, तू ही मां है, तू बन्धु, तू सखा है।
तेरे सिवाय कोई माता पिता नहीं है॥

वह कौन वस्तु लाऊं, जिसको तुझे चढ़ाऊं।
जो कुछ है, सो है तेरा, कुछ भी मेरा नहीं है॥

दीपक में ज्यों पतंगा, जब तक कि वीर कोई।
तुझमें जला नहीं है, तुझसे मिला नहीं है॥

भजन

पितु मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो॥

सब भांति सदा सुख दायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥

भूलि हैं हमहीं तुमको, तुमतो हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो बिस्तारे हो॥

महाराज महा महिमा तुम्हरो, समुझें बिरले बुधिवारे हो।
सुख, शान्ति निकेतन प्रेम निधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो॥

यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप' हरी, केहि के अब और सहारे हो॥

शक्ति निकेतन जय बलधाम
बल दो हमको हे भगवान॥
तेजोमय जय ज्योतिर्धाम।
ज्योतिर्मय कर दो श्रीराम॥
प्रीतीमय कर दो श्रीराम।
शक्तीमय कर दो श्रीराम॥
सेवामय कर दो श्रीराम।
भक्तीमय कर दो श्रीराम॥
मंगलमय जय मंगलधाम।
मंगलमय कर दो भगवान॥

प्रभु दर्शन विन नैन उघारे

तुम तो वसत हरि रोम रोम में,
फिर काहे नहिं मोहिं दिखारे।

तुमरो नाम पतित - पावन है,
फिर भी दीन जन होत दुखारे॥

रैन दिवस तुम्हारी आशा में,
नैंन फिरत हैं मारे मारे।

एक बार प्रभु दर्शन दीजै,
यही आश तुम्हारे आगे॥

'राधा' के प्रभु जवहि मिलोगे,
सर्वस वारूं तो पै प्यारे ! प्रभु—

जीवन का मैंने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में॥

हम तुम को देव नहीं भजते, तुम हमको फिर भी नहिं तजते।
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में॥

हममें तुममें बस भेद यही, हम नर हैं तुम नारायण हो।
हम हैं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

दृग 'बिन्दु' बनाया करते हैं, एक सेतु विरह के सागर में।
जिससे हम उतरा करते हैं, उस पार तुम्हारे हाथों में॥

मोहि अपने ही रंग में रंग दे, हे गिरिधर गोपाल ॥

अपने रंग में ऐसा रंग दे,
जो मेरे अंग अंग को रंग दे।

रंग दिया था जो राधा को, सोई रंग मो पै डार ॥
हे गिरिधर गोपाल ॥

मुझको मनहर, जग से क्या डर,
तू मेरे अंग संग है नटवर।

हे दुःख भंजन ! हे सुखकारी ! कर दो मोहि निहाल ॥
हे गिरिधर गोपाल ॥

तेरी लीला जग से न्यारी,
श्याम विहारी हे बनवारी।

मोहन प्यारे, गिरिवर–धारी, दरश दीजो नन्दलाल ॥
हे गिरिधर गोपाल ॥

हे जग त्राता, विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन हे !
प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो, दुःख दारिद्रय विनाशन हे !
नित्य अखन्ड अनन्त अनादी, पूरण ब्रह्म सनातन हे !
जगआश्रय जगपति जगवन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे !
प्राण-सखा त्रिभुवन-प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे !

भगवान तुम्हारे मन्दिर में,
मैं तुम्हें रिझाने आई हूं।
वाणी में तनिक मिठास नहीं,
पर विनय सुनाने आई हूं॥
पूजा के लिये न पास फूल हैं,
फिर भीं यह साहस देखो।
सबके सन्मुख मानी होकर,
यह विनय सुनाने आई हूँ॥
अति लज्जित हूँ क्या भेंट धरूं,
भगवान तुम्हारी सेवा में।
केवल अपना यह हृदय खोल,
सम्बन्ध जुड़ाने आई हूँ॥
प्रभु का चरणामृत लेने को,
दासी पै जल भी पास नहीं।
केवल यह अपने आंसुओं का,
मैं हार चढ़ाने आई हूँ॥

करोगे करुणा कब करुणेश।
रत्नराशि से सज्जित रजनी, सूनी बिनु राकेश।
त्यों तुम बिनु मम जीवन सूना, सूना बिनु प्राणेश॥
कभी मनोरथ पूर्ण हमारे भी होंगे हृदयेश।
निरख सकूंगी मैं मंजुल छवि, आतम के प्रदेश॥

निर्बल के बल राम !

कृपा दृष्टि से देते जन को, दिव्य परम पद दान ॥
निर्बल हो जब शरण पड़े हम, दिया नाम धन दान ।
प्रेम शक्ति से सिंचित करके, शुद्ध किये तन प्रान ॥
हृदय-अन्तर में ज्योति जगाकर, दिव्य देत हो ज्ञान ।
ज्ञान-चक्षु जब ही खुल जावे, मिट जावे भय मान ॥
एक रूप ही दीखें सकले, प्राणी आत्म समान ।
ज्योति में ज्योति समाये तब ही, मिले एकता ध्यान ॥
भेद भाव सब ही मिट जायें, कर्म होयें निष्काम ।
प्रेम मग्न हो, प्रभु गुण गावें, निर्धन के धन राम ॥

मेरा हाथ संभालो राम,
मुझको गले लागा लो राम ।
अपनी गोद बिठालो राम,
दुखिया को अपना लो राम ।
गिरता पड़ता आया हूँ,
भावों की माला लाया हूं ।
थोड़ा सा मस्का दो राम,
करुणा-जल बरसा दो राम ।
कैसी तेरी माया राम,
कोई जान न पाया राम ।
मत ज्यादा तरसाओ राम,
कृपा बिन्दु बरसाओ राम ।

प्रभु जी मैंने पाप बहुत करि डारे !
ऊंच-नीच का मरम न जाना लगे मुझे सब प्यारे ।
मैं अबोध बालक हूं स्वामी गहो स्व दृष्टि सहारे ।।
सुमिरन किया न अजहूँ भूल से अब हूं सरन तिहारे ।
निपट मूर्ख को तुम बिनु प्रभु जी, भव से कौन उवारे ।।
छाँड़ भूल प्रभु देव पाछिली अब हूं खड़ा तव द्वारे ।
'धन' इक दास प्रभु अविनाशी ढूंढे चरण तिहारे ।।

मां आलोक भरो ।
जीवन सफल करो ।।

मर्त्यलोक मरुथल के मृण्मय,
सन्तापों के सम्बल चिन्मय ।
शुष्क-निर्झरी के चिर प्रश्रय,
अविरल स्रोत झरो ।

मेरी पीड़ाओं का परिग्रह,
कर्म संस्करणों का संग्रह ।
अब तो मेरे अनुग्रह-निग्रह,
केवल तुम्हीं हरो ।

मैं तो राम दरश की प्यासी, मुझको राम मिलादो जी,
राम मिला दो साजन, मुझको राम मिला दो जी।
मैं तो राम रमन अभिलासी, मुझको राम मिलादो जी,
मैं तो प्रेम पगन की प्यासी, मुझको प्रेम पिलादो जी।
मैं तो ज्योति दरश की प्यासी, मुझमें ज्योति जगादो जी,
मैं तो चरण कमल की दासी, मुझको चरण लगालो जी।

डूबती नैय्या किनारे लगाओ,
आवो प्रभू एक बार तो आवो।
दीनों के रक्षक, सब के हो स्वामी,
करुणा सिन्धु अन्तर्यामी।

शरण पड़े की लाज बचावो ।। आवो प्रभु०...
चारों तरफ से बादल छाये।
तुम बिन इनसे कौन बचाये,

नैय्या किनारे पे तुम्हें ही लगाओ ।। आवो प्रभु०...
मन मन्दिर यह सूना पड़ा है,
तुम बिन इसमें न कोई बसा है

सूना मन्दिर आन बसावो " आवो प्रभु०...
मन मन्दिर में आवो प्रभु अब।
ज्ञान की ज्योति जगावो प्रभु अब,

ज्योति से ज्योति आन मिलावो ।। आवो प्रभु०...
डूबती नैय्या किनारे लगावो...

धीरे धीरे जीवन नैया, चली प्रभु की ओर,
धीमे धीमे डोल रही है तट के बन्धन तोर।
चली हरी की ओर। धीरे धीरे...

जल गहरा चंचल है तरंगे, व्याकुल मन की विरही उमंगे,
कैसे बिन पतवार के नैया, जावेगी प्रभु ठौर। चल हरी......
आँधी चलती दूर किनारा, छूटा जग से नाता सारा,
मेरा तू प्रभु तू ही सहारा, चरनन संग लो जोर। चली हरी...
जी घबराता मृत्यु दीखती, छिन भर में अब नाव डूबती,
मेरा प्रभु अब हाथ थाम लो, ले चलो अपनी ओर। चली हरि...
डर मत मन यह काली राती, मन-मन्दिर धर नाम की वाती,
लेंगे थाम वह राम खिवैया, बाँध प्रेम की डोर।
चली हरी की ओर। धीरे धीरे जीवन नैया...

हरि नाम जपो, हरी नाम भजो,
प्रभु कर्म करो, श्री राम भजो।
हरी नाम बड़ा सुखकारी है,
हरी नाम बड़ा उपकारी है।
मद मोह तजो, श्री राम भजो,
हरीं नाम जपो, हरी नाम भजो।
हरि नाम से झंझट हटते हैं,
हरि नाम से संकट कटते हैं।
काम क्रोध तजो, श्रीराम भजो,
हरी नाम जपो, हरि नाम भजो।

इक तेरा सहारा, इक तेरा सहारा,
इस डूबती नय्या का, इक तू ही किनारा।
इक तेरा सहारा···
टूटी है नय्या मेरी, और दूर किनारा,
बढ़ती हुई लहरों का, इक तू ही किनारा।
इक तेरा सहारा···
आशा की डोरी मेरी, कहीं टूट न जाये,
साहिल पै नय्या मेरी, कहीं फूट न जाये।
इक तेरा सहारा –
अबलों के बल हो, प्रभो! आ, आके बचाना,
मंझदार में नय्या मेरी, इसे पार लगाना।
इक तेरा सहारा···

पूरण हो यह आस, प्रभु! हम तेरे ही हो जाएं।
भक्ति-हीन हम भक्ति हमें दो,
शक्ति-हीन हम शक्ति हमें दो,
शुद्ध हृदय से नाथ तुम्हारा सुमिरण कर पुलकाँएं॥
जड़ चेतन में तुम्हें निहारें,
अन्तरतम से तुम्हें पुकारें,
विरह व्यथा की उच्छवासों से, रोम रोम तड़पाएं
परम प्रीति की प्रबल हिलोरें,
पल पल नाथ उठें मन मोरें,
प्रियतम में अपने को देखें, हम प्रियतम बन जाएं

जगत को थामने वाले मेरी बिगड़ी बना देना।
रंगी है तूने सब दुनियाँ, मेरा चोला रंगा देना॥

तेरी ज्योती जगे हर जा, जगत के कोने कोने में;
जगत के कोने कोने में;

बुझी ज्योती मेरे मन की, प्रभो! फिर जगा देना।
जगत को थामने···—

तेरा ही नूर है हर शै, बसाई तूने कुल दुनियां;
बसाई तूने कुल दुनियाँ;

उजड़ी बस्ती मेरे मन की, प्रभो! फिर से बसा देना।
जगत को थामने——

पड़ी नय्या भंवर में है किनारा दूर है प्रीतम;
किनारा दूर है प्रीतम;

कृपा की दृष्टि से भगवन्, किनारे पर लगा देना।
जगत को थामने——

रोले, आज हृदय तू रोले,

विरह-व्यथा की उच्छ्वासों को, रो रो कर तू खोले।

मुझ विरहिन का जीना कैसा ?
पिया मिलन को कण-कण व्याकुल,
रोम रोम पुलकित अति आतुर !

अश्रुवेग की सुवित धार में उच्छ्वासों को खोले।
आज हृदय तू... —

अन्तस्तल से हूक उठत है—
सूनेपन की दग्ध आह सी,
तृषित जन्तु की क्षुब्ध दाह सी,

मौन भाव की गहराई में, अपने पन को खोले।
आज हृदय तू—...

पिया कहाँ ? कहां है, सजनी !
मेरा प्रियतम प्राण पियारा,
मेरा जीवन का आधारा !

विरह-व्यथा में, मिलन चाह में, बस उनकी ही होले।
आज हृदय तू—...

उन विन पल भी जीवन कैसा !
जीना, उनकी होकर जीना,
मरना, उनकी होकर मरना;

अपना आपा उनका करके, प्रेम अमिय रस घोले।

यहि विनती है पल पल छिन छिन,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में,
मिलता है सच्चा सुख केवल,

भगवान तुम्हारे चरणों में ॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों ओर अन्धेरा हो,

पर मन नहीं डगमग मेरा हो ॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

चाहे बैरी सब संसार रहे,
मेरा जीवन मुझ पर भार रहे,

मौत गले का हार रहे ॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

चाहे आग में मुझको जलना हो,
चाहे कांटों पर भी चलना हो,

चाहे छोड़ के देश निकलना हो ॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे,

मेरा काम यह आठों याम रहे ॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

मेरे देवता मुझको देना सहारा,

कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।

तेरे रास्ते से हटाती है दुनियां,

इशारों से मुझको बुलाती है दुनियां।

देखूं न जग का मैं झूठा इशारा (मेरे देवता मुझको...

बिना तेरे मन में समाये न कोई

लगन का यह दीपक बुझाये न कोई

तू ही मेरी नदिया, तू ही है किनारा। (मेरे देवता...

तेरे नाम का गीत गाता रहूं मैं

सुबह-शाम तुमको सुनाता रहूं मैं

तेरा नाम मुझको हो प्राणों से प्यारा।

कहीं छूट जाए न दामन तुम्हारा

मेरे देवता मुझको देना सहारा॥

कर्ता धर्ता लीलामय हो,
तुम बिन और न कोई धाम।
किस विधि वर्णन मैं कर पाऊं,
लयता तेरी बिना विराम।
तुम ही तुम हो, केवल तुम हो,
मैं कुछ नाहीं, रमते राम।
पत्र पुष्प में व्यापक तुम हो,
कण-धूलि में तेरा भान।
चन्द्र सूर्य भी तुम से चमकें,
तुम से होता अनहद गान।
तुम भीतर हो, बाहर तुम हो,
तुम ऊपर, तुम नीचे, राम।
अस्थि मज्जा में तुम व्यापक,
रोम रोम में रमते, राम।

———

प्रभु याद तुम्हारी याद रहे, और दिल में किसी की याद न हो,
इस दिल की सुन्दर नगरी में कोई तेरे सिवा आबाद न हो।
यह मेरी निगाहे तेरे ही दीदार की हर दम प्यासी हो,
आ जाना देर लगाना नहीं, कहीं मेरा यह दिल नाशाद न हो।
तेरे प्रेम की मस्ती में खोकर, सब भूल तुझे मैं पा जाऊं,
तेरा नाम रहे लब पर हर दम, बस और कोई फरियाद न हों।
हर डगर डगर हर नगर नगर, हर घर में प्रेम की मस्ती हो,
बिलकुल न रहे कोई दिल ऐसा जिस दिल में तेरी याद न हो !

है दीन बन्धु करुणा सिन्धु,
पार करो मोरी नैया ॥

गहरा जल है दूर किनारा,
तुम ही पार लगइया ॥

रात अन्धेरी पग नहीं सूझे,
तुम ही राह दिखैइया ॥ हे दीन…

द्रुपद सुता की लज्जा राखी,
लाखों चीर वढ़ैया ॥

सूरदास स्वामी अन्तर यामी,
आवा गमन बचइया ॥ हे

हे राम मैं तुझ में रम जाऊं. ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो ।
मैं झोली पसारे आन खड़ा, भिक्षा से यह झोली भर दो ॥

यह चंचल मन संकल्पों का, नित जाल विछाया करता है ।
इक झांकी दिखा कर अपनी प्रभू, मन मोहन रूप इसे कर दो ॥ हे राम…

चित चिन्ता करता रात दिवस, विषयों के आनन्द पाने को ।
हे सत् चित् आनन्द रूप प्रभो, मेरे चित् को चेतन कर दो ॥ हे राम…

पर दोष न देखूं नैनों से, न बुराई कानों से सुनूं ।
सारा जग राम का रूप बने, ऐसी मेरी दृष्टि कर दो ॥ हे राम…

दिल से गुण गान करूं तेरा, जिह्वा से नाम उच्चारा करूं ।
ऐसी कृपा कर दो हे हरि, इस वाणी में अमृत भरदो । हे राम…

******

भगवान मोरी नैय्या — उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है — आगे भी निभा देना ॥

छल बल के साथ माया
घेरे जो आ के मुझ को
तुम देखते न रहना
झट आ के बचा लेना ॥ भगवान——

सम्भव है झंझटों में
मैं तुमको भूल जाऊं
पर नाथ कहीं तुम न
मुझ को भी भूल जाना ॥ भगवान——

तुम देव मैं अराधक
तुम इष्ट मैं पुजारी
यह बात सत्य है तो
सत्य करके दिखा देना ॥ भगवान——

बन कर के मैं पपीहा
पी पी रटा करूँगी
तुम स्वाती बूंद बन कर
प्यासे पे दया करना ॥ भगवान——

मैं मोर बन के मोहन
नाँचा करूंगी बन में
तुम श्याम घटा बन कर
उस बन में उठा करना ॥ भगवान——

—

दर्शन दो श्री राम मोरी अखियाँ प्यासी रे।
मन मन्दिर की ज्योति जगा दो घट घट वासी रे॥

मन्दिर मन्दिर मूरत तेरी
फिर भी दीखे न सूरत तेरी
युग बीते न आई मिलन की पूर्णमाशी रे ऽऽ ऽऽ॥
दर्शन दो……

द्वार दया का जब तू खोले
पंचम सुर में गूंगा बोले
अन्धा देखे लंगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे ऽऽ ऽऽ॥
दर्शन दो……

पानी पीकर प्यास बुझाऊं
नैनन को कैसे समझाऊं
आंख मिचौनी छोड़ो अब तो घट घट वासी रे॥ ऽऽ ऽऽ॥
दर्शन दो—…

निर्बल के बल, धन निर्धन के
तुम रखवारे भक्त जनन के
तेरी दया से सब कुछ पाऊं मिटे उदासी रे ऽऽ ऽऽ॥
दर्शन दो…—

नाम जपे पर तुझे न जाने
उनको भी तू अपना माने
तेरी दया का अन्त नहीं है हे दुःख नासी रे ऽऽ ऽऽ॥
दर्शन दो - —

तक़दीर पलट दी जिस दर ते
प्रीतम दा द्वारा कहंदे ने
पत्थरां नूं पारस कर देन्दा
ओहदी अंख दा इशारा कहंदे ने । (तकदीर.....

जो इसदा नाम ध्यांदा ए
सब कष्ट ओहदाँ मिट जाँदा ए
एह सब दे दुखड़े दूर करे
सुखाँ दां भंडारा कहंदे ने (तकदीर.....

जोभी इसदे गुण गाँदा ए
ओ भव सागर तर जाँदा ए
एह चक्र चौरासी वाला कट देवे
एहनू तारन हारा कंहदे ने । (तकदीर.....

तू एंवे वक्त गँवावे क्यों
दर २ दे धक्के खावे क्यों
ओहदा दर २ रुलना मुक जांदा
जिन्हुँ इसदा सहारा कहंदे ने । (तकदीर.....

ऐहदे दर दा बन जा दीवाना
कहे वाल तू हो जा दीवाना
पी नाम प्याले भर भर के
सागर दा किनारा कंहदे ने । (तकदीर.....

तरे मन्दिर मेरे भगवन तेरी पूजा को आई हूं ।
मैं लेकर फूल श्रद्धा के चढ़ाने को मैं आई हूं ।।

मैं पापी हूं कुकर्मी हूं मैं जो कुछ हूं सो तेरी हूं ।
पतित-पावन तुम्हारा नाम सुन कर के मैं आई हूं ।। तेरे—

तू मेरा है मैं तेरी हूं फरक तुझ में और मुझमें क्या ।
तू सागर है मैं क़तरा हूं इसी नाते से आई हूं ।। तेरे—

तरा दोगे तो तर जाऊं डुबा दोगे तो क्या शिकवा ।
भक्त वत्सल तुम्हारा नाम सुन कर के मैं आई हूं ।। तेरे—

ऐ दिल खुशी से होजा, भगवान के हवाले ।
मर्जी पै छोड़ उसकी राखे जहां रखा ले ।।

उम्मीद ना-उम्मीदी दुःख सुख मिलन जुदाई ।
इन सबके मेल ही में है ज़िन्दगी समाई ।।

तू उठ के इनसे ऊपर परमात्मा को पाले ।
यह साँवरा सलोना संसार का सहारा ।।

कर देगा पार बेड़ा, मझधार से हमारा ।।

॥ श्री राम ॥

गुरु चरणों में

मेरे गुरुदेव चरणों पर सुमन श्रद्धा के अर्पित हैं।
तेरी ही देन है जो है, वही चरणों में अर्पित है॥
न प्रीती है प्रतीती है, नहीं पूजन की शक्ति है।
मेरा यह तन मेरा यह मन मेरा जीवन समर्पित है॥
मेरे गुरुदेव——

मेरी इच्छाए हों तेरी मेरे सब कर्म हों तेरे।
बना ले यन्त्र अब मुझको तुझे कनकन समर्पित है॥
मेरे गुरुदेव—…

तू ही हो भाव में मेरे विचारों में पुकारों में।
तेरे चरणों में हे गुरुवर, मेरा सर्वस्व अर्पित है॥
मेरे गुरुदेव……

गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः ।
तुम्हरी महिमा है अपार महा ।। गुरुदेव नमः

तुम ही हरि हो तुम ही हर हो,
तुम शेष गणेश दिवाकर हो,
तुम्हरी महिमा है अपार महा । गुरुदेव नमः

तुम पूर्ण ज्ञान प्रकाशक हो,
घट अन्तर भीतर बाहर हो,
तुम्हरी महिमा है अपार महा । गुरुदेव नमः

तुम मात-पिता और भ्राता हो,
तुम मुक्ती के भी दाता हो.
तुम्हरी महिमा है अपार महा । गुरुदेव नमः

तुम जानत हो सबके मन कीं,
क्यों भूल गए हमारे मन की,
तुम्हरी महिमा है अपार महा । गुरुदेव नमः

प्रभु नैय्या मेरी मंझधार पड़ी,
तब कृपा बिना मेरा कौन सही,
तुम्हरी महिमा है अपार महा । गुरुदेव नमः

तू है स्वामी मेरा, मैं हूं सेवक तेरा, निर्विकारा !
नमस्कार लो, देव हमारा ॥

जगत उधारण को नर तन धारा,
तेज - पुंज हो ज्ञान भण्डारा।

आदर्श मूरत कहूं, क्या-क्या उपमा करूं पतित उधारा !
नमस्कार लो देव हमारा ॥
तू है स्वामी मेरा······

कर्महीना, मैं बल बुद्धिहीना,
जल विहीना, तड़पती मैं मीना।

तू है सागर गुरु, प्रेम-आगर गुरु, दे सहारा !
नमस्कार लो, देव हमारा ॥
तू है स्वामी मेरा·········

डोरी जीवन दी है हाथ तेरे
करणधार तू ही एक मेरे,

यह जो नय्या मेरी, मझधार अड़ी, खेवनहारा !
नमस्कार लो, देव हमारा ॥
तू है स्वामी मेरा·········

उच्चा मन्दिर सतगुर तेरा, कैसे पहुँच मैं पाऊं ?
निर्गुणहारी कोई गुण नाहीं, कैसे तुम्हें रिझाऊं ?
हिम-आलय की चोटी से भी उच्चा मन्दिर तेरा,
उच्चा मन्दिर तेरा।
राम-नाम का बल नहीं पल्ले, कैसे पहुँच मैं पाऊं॥
उच्चा मन्दिर सतगुर…

अमृतमय उपदेशों से है, दूर हुआ दुःख भारी,
दूर हुआ दुःख भारी।
कर्मकाण्ड और नेमव्रतों को, कर कर केती हारी,
कर कर केती हारी।

यदि भूल से दर्शन आपका, गुरुदेव हो जाता।
मैं चरणों में लिपट जाता, गले का हार हो जाता॥

अगर मेरे हृदय में प्रेम का संचार हो जाता।
मेरा जीवन सफल होता, मेरा उद्धार हो जाता॥

न पूछो मेरी अभिलाषा, मगर इतना समझता हूं।
तुम्हारी एक ठोकर से बेड़ा बेड़ा पार हो जाता॥

छिपे हो आके नैनों में, उतर कर दिल में आ जाना।
तुम्हारा परदा रह जाता, मुझे दीदार हो जाता॥

न मैं दुनियां का दीवाना, न चारों ही पदारथ का।
चरण-सेवा का आपकी, केवल अधिकार हो जाता॥

गुरु बिन कौन लगावे पार,
जीवन नैय्या डग-मग डोलत।

टूटि गयो पतवार।

मूढ़ खेवैय्या मरम न जानति;

वही जाति मंझधार।

आंधी अधम ऊधम जोते हैं,

चहुँ दिशि हाहाकार।

पाहि पाहि करि टेरत हारयों,

कोऊ न सुनत पुकार।

गुरु बिन कौन लगावे पार!

दीनानाथ दीन दुःख हारी,

पत राखो करतार।

"राम शरण" तब चरण पड़ियो है,

मानि गयो हिय हार।

ऐसी कृपा करो करुणामय,

जासो होय उबार।

तारों में चन्द्र समान हो तुम।
गुरुदेव तुम्हारी जै होवे॥

इस नैय्या के पतवार हो तुम।
गुरुदेव तुम्हारी जै होवे॥

इक आपका ही तो सहारा है।
तन मन धन आप पै वारा है॥

बिना आपके कोई न हमारा है।
गुरुदेव तुम्हारी जै होवे॥

इक अर्ज़ मेरी मंजूर करो।
कुछ तो अब तरस हजूर करो॥

मरा मन का अन्धेरा दूर करो।
गुरुदेव तुम्हारी जै होवे॥

मुद्दत से थी तलाश मुझे।
मिल गए गुरु आप से आप मुझे॥

कर कृपा बुला लो पास मुझे।
गुरुदेव तुम्हारी जै होवे॥

सतगुर दे द्वारे आ वन्देया
ऐथे विगड़ी बनाई जान्दी ऐ
इस द्वार ते हर इक आसी दी
हर आस पुजाई जांदी ऐ। (सतगुर दे द्वारे...

एथे अर्जा़ गुजरिया जान्दिया ने
एथे सजदे कीते जान्दे ने
एह दर है बख्शनहारे दा
ऐथे भुल बख्शाई जान्दी ए। (सतगुर दे द्वारे...

मस्ती दे मयखाने अन्दर
जदों नाम - खमारी चढ़ जांदी
फेर नैनों से प्यार छलक जांदा
सच्ची लग्न लगाई जान्दी ऐ। (सतगुर दे द्वारे...

ऐस दर ते चौरासी कट जांदी
मुहों मंगिया भिक्षा मिल जांदी
गर्दन दे नाल झुका के दिल
जदों अलख जगाई जान्दीं ए। (सतगुर दे द्वारे...

सतगुर दे चरणां विच बहन लई
हस्ती नूं मिटानां पैन्दा ए
पहले भस्म रमानी पैन्दी हे
फिर धूनि रमाई जान्दी ए। (सतगुर दे द्वारे...

दुखियां दियां फरियादां दी
ऐस दर ते सुनाई हुन्दी ए
तस्वीर जिगर दे जख्मां दी
सतगुर नूं दिखाई जाँदी ऐ। (सतगुर दे द्वारे...

आरती

मैं तो आरती उतारूं अपने राम जी की।
अपने राम जी की, शोभा धाम जी की॥
शोभा धाम जी की, ज्योतिर्धाम जी की।
ज्योतिर्धाम जी की, शक्ति धाम जी की॥
अपने राम जी की, प्रीतिधाम जी की।
प्रीतिधाम जी की, शक्तिधाम जी की॥
अपने राम जी की, चिन्मयधाम जी की।
चिन्मयधाम जी की, करुणाधाम जी की॥
अपते राम जी की, रमते राम जी की।
रमते राम जी की, प्रियतम राम जी की॥
मैं तो तन मन अपना वारूं, अपने राम जी पर।
मैं तो सर्वस्व अपना वारू, अपने राम जी पर॥
मैं तो कण कण अपना वारूं, अपने राम जी पर।
मैं तो वारी वारी जाऊं, अपने राम जी पर॥

मेरा तू, मेरा तू, मेरा तू ही एक तू!
मेरा तू ही इक तू, मेरा तू ही एक तू!
मेरा दूसरा न कोई, राम! तू ही एक तू!
राम! तू ही एक तू, राम! तू ही एक तू!
मेरे जीवन का आधारा, राम! तू ही एक तू! मेरा—

राम आरति होनें लगी है।
जगमग जगमग ज्योति जगी है।।

प्रेम वारि तब चिन्मय प्यारी
छम छम बरसे मधुमय न्यारी।।
वृष्टि होवे सब पर भारी।
दृष्टि तेरी प्रेम पगी है ।। राम आरती…

कृपा वारि से पावन सब जन।
दया दृष्टी से पावन हो मन।।
भाव तेरे से पुलकिल हो तन।
सब जगती आनन्द मयी है।। राम आरती…

घट घट में प्रभू ज्योति राजे।
शक्ति भक्ति से सब जग जागे।।
ईति भीति सब जन से भागे।
सब जन मन में प्रीति भरी है।। राम आरती…

अपनापन आपे को खोदे।
सेवा कर प्रीति को बोदे।।
अहं भाव को बिलकुल रौंदे।
दिव्य भाव की ज्योति जगी है।। राम आरती…

राम राम गुंजार जगें सब।
दिशि दिशि में झंकार भरें सब।।
रोम रोम रमकार करें सब।
भीतर बाहर राममयी है।। राम आरतीं…

आरति श्री राम घट घट वासी।
सत् चित्त आनन्द हृदय-निवासी ॥

झिलमिल झिलमिल ज्योति बिराजे।
कण कण में हरि शोभा राजे।
विविध रूप में दिशि दिशि साजे।
मंगल हरि सुखराशी ॥ आरति श्री राम…

जी जीवन हम सब का प्यारा।
कृपामय हरि प्राण अधारा।
ज्योतिर्मय हो प्रेम अपारा।
शक्ति पूर्ण प्रभू ! दुःख नाशी ॥ आरति श्री राम…

ज्ञान रूप हरि ! जीवन धन हो।
अखिल भुवन में तुम ही तुम हो।
जोमय हो जग जीवन हो।
मंगलमय प्रभु प्रेम - प्रकाशी ॥ आरति श्री राम…

हरि ! मङ्गलमय मोद निधान हो।
अमृत हो पूरण काम हो।
यज्ञमय प्रभु शक्ति निधान हो।
अशरण शरण हरि ज्ञान विलासी ॥ आरति श्री राम…

जगमग जगमग ज्योति जगा के,
आरति करता है तव दास।
मन मन्दिर में तुझे रमा के,
निशिदिन रहूं तिहारे पास॥
श्रवनन सुजश सुनहुँ निशिवासर,
गुन गाऊं तेरा प्रति श्वास।
मन मधुकर तव पद सरोज पै,
पावै अविचल सदा निवास॥
तन मन धन सब अर्पण तेरे,
करूं प्रेम सों तजि अभिलास।
तू है मेरा, मैं हूं तेरा,
है यह मेरा दृढ़ विश्वास॥
जित देखूं तित तू ही तू है,
कण कण में तेरा ही प्रकाश।
पाहन पत्र पुष्प पशु पक्षी,
नर तन में तेरा ही विकास॥
बार बार बलिहारी जाऊं,
तव चरनन पै सहित हुलास।
निज कर-कमल सीस धरि मेरे,
'राम शरण' की पुरवहु आस॥

जगदम्बे जगजननी जय मां।
जय मां जय मां जय जय माँ॥
निर्मल मन दो, ज्ञान विमल दो।
सबल मति दो, हमको मां॥ जग—
अटल भक्ति दो, पूर्ण प्रेम दो।
अमर स्नेह दो, हम को माँ॥ जग—
शरण तिहारी आए मां।
हमको अपना करलो मां॥ जगदम्बे—

जय हो! जय हो!
माँ! तेरी जय जय जय हो॥
गगन मंडल में धरनी-धर में माता!
कण कण में सबके, तेरी जय जय हो॥
जीवनदा! बलदा! मंगलदा! माता!
वरदा, शुभदा, मां! ज्योतिर्दा तुम हो॥
करुणा-कण हो, प्रीति प्रदा माता!
मम जीवन-धन, मग-दर्शक तुम हो॥
शक्ति महा हो, कृपामयी माता!
वत्सलता से परिपूरण तुम हो॥
आश्रित जन हैं, तेरी शरण, माता!
कृपा करो, हमको अपना तुम कर लो॥

कहं लगि आरति दास करे।

सकल भुवन जाकी ज्योति जगे, प्रभु ज्योति जगे।।

अनहद ध्वनि जाके बाजा बाजे,

कहा भयो एक शंख भरे, प्रभु शंख भरे।।

कहं लगि आरति दास करे।१।

सात समुद्र जाके चरण विराजें,

कहा भयो एक कुम्भ धरे, प्रभु कुम्भ धरे।।

कहं लगि आरति दास करे।२।

चन्द सूरज जाके नख में राजे;

कहा भयो एक दीप धरे, प्रभु दीप धरे।।

कहं लगि आरति दास करे।३।

सब प्राणिन का जो तनु धारे,

कहा भयो नैवेद्य धरे, प्रभु नैवेद्य धरे।।

कहं लगि आरति दास करे।४।

जय सन्तो के परम सहायक,
जय ऋषियों के धाम हरे।
जय देवों के देव दयामय,
जय मुनियों के राम हरे॥
जय जय मँगल धाम हरे,
जय जय सुखमय राम हरे।
जय मम प्रियतम राम हरे,
जय मम जीवन प्राण हरे॥

मंगलमय नित करूं आरती। गुरु-चरनन की सेवा॥
दोप जलाऊं धूप दिखाऊं। पुष्पांजलि गहि लेवा॥
जगमग जगमग करूं आरति। पूजूं घट घट देवा॥
मंगलमय नित करूं आरती

गंगाजल से चरण पखारूं। चंवर करूं तव देहा॥
बार बार चरण अराधूं। एक भरोसा तेरा॥
मंगलमय नित करूं आरतो

शंख ध्वनि से गगन गुंजारूं। भोग लगा दूं मेवा॥
तुम्हहिं मनावूं, तुम्हहिं रिझाऊं। करूं तुम्हारी सेवा॥
मंगल मय नित करूं आरती

बार वार पद पद्म नमामि। क्षमहुँ नाथ इक बेरा॥
इन नयनन मुख चन्द्र निहारूं। पुरव मनोरथ मेरा॥
मंगलमय नित करूं आरती

संकीर्तन

श्रीराम, जय राम, जय जय राम ।
जय राम, जय राम, जय जय राम ।।

राम कृपा ही केवलम् ।
गुरु कृपा ही केवलम् ।
मात् कृपा ही केवलम् ।
राम कृपा ही केवलम् ।

मेरे गुरुदेव आशिश दो, मेरा संकल्प पूरा हो ।
वही संकल्प हो मेरा, कि जो आदेश तेरा हो ।।
परे लोकान्तरों से भी गति तेरी निराली है ।
मुझे भी भावना वह दे जो भावा देश तेरा हो ।।
कहा करते थे मेरा स्रोत ही तुझमें प्रवाहित है ।
उठा दो ज्वार अन्तर में दिखे जो तत्व मेरा हो ।।
नहीं कुछ साधना – भक्ति चरण आश्रित मैं तेरी हूं ।
चक्षु सीपी की कणिका में छलकता प्यार तेरा हो ।।
भले हैं हम तुम्हारे हैं बुरे हैं हम तुम्हारे हैं ।
गोद में शीश हो मेरा पीठ पर हाथ तेरा हो ।।
तुम्हारी याद छाई है सभी कर्मों विचारों में ।
तेरे वात्सल्य से पालित हूं मुझे आधार तेरा हो ।। मेरे…

प्रेम के पुंज दया के धाम,
आय रमो मुझमें मेरे राम।

दया के धाम कृपा मय राम,
कृपामय राम दया के धाम।

आय रमो मुझमें मेरे राम,
आन बसो मुझमें मेरे राम।

तू रमजा, तू रमजा, तू रमजा, मेरे पास।
मेरे राम, मेरे राम, मेरे राम राम राम॥
तन यह तेरा, मन यह तेरा, तेरा पिण्ड पिरान।
मैं हूँ तेरा, तू है मेरा, तू रमजा मेरे राम॥

नारायण नारायण जय गोविन्द हरि।
नारायण नारायण जय गोपाल हरि।
जय गोविन्द हरि, जय गोपाल हरि।

पतितो को तुम करो पुनीता,
हे राम सीता! हे राम सीता!

हरी नाम जपो, हरी नाम भजो।
प्रभु कर्म करो, श्री राम भजो॥
हरी नाम से संकट कटते हैं।
हरी नाम से झंझट हटते हैं॥
काम क्रोध तजो, श्री राम भजो॥ हरी...—

ज्योति से ज्योति जगा मेरे राम।
ज्योति से ज्योति जगा दे राम॥
प्रेम की ज्योति जगा मेरे राम।
प्रेम की ज्योति जगा दे राम॥
शक्ति की ज्योति जगा मेरे राम।
शक्ति की ज्योति जगा दे राम॥
ज्ञान की ज्योति जगा मेरे राम।
ज्ञान की ज्योति जगा दे राम॥
भक्ति की ज्योति जगा मेरे राम।
भक्ति की ज्योति जगा दे राम॥
नाम की ज्योति जगा मेरे राम।
नाम की ज्योति जगा दे राम॥
ज्योति से ज्योति मिला मेरे राम।
ज्योति से ज्योति मिला दे राम॥

हरी हरी बोल, हरी हरी बोल।
बोल मेरी रसना, हरी हरी बोल॥ हरी...
बोल मेरे मनुआ, हरी हरी बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल॥ हरी—
हरी बोल, हरी बोल।
हरी बोल, हरी बोल॥
हरी हरी हरी हरी
हरी हरी हरी हरी

हरे राम रामा, हरे राम रामा!
जपो राम रामा, रटो राम रामा।
कहो राम रामा, भजो राम रामा॥
कृपामय राम, दयामय राम।
सुधामय राम, स्नेहमय राम॥
(दुःख तारन राम, दुःख हारन राम)।
जय जय राम, जय जय राम॥
दुःख-भंजन राम, मन-रंजन राम।
निरंजन राम, भवभंजन राम॥
(अमृतमय राम, आनन्दमय राम)।
जय जय राय, जय जय राम॥

******

सांचो तेरो नाम, राम! सांचो तेरो नाम।
झूठे जग के काम राम! सांचो तेरो नाम॥

अब तो कृपा करो श्री राम,
अब तो दया करो भगवान।
मैं तो शरण तिहारी आया,
मैंने चरणन शीश नवाया॥ अब तो—

—

मैं तेरा हूँ श्री राम, तू मेरा है भगवान।
तू मेरा है, तू मेरा है, तू मेरा है भगवान।
तू मेरा जीवन प्राण, तू मेरा सर्वस्व राम॥

जय माँ, जय माँ, जय माँ, माँ! माँ!!
जय माँ! ओ माँ! मेरी माँ! मां! माँ!!

—

अशरण शरण शान्ति के धाम,
मुझे भरोसा तेरा राम।
शरण तिहारी आयो राम,
मुझको राखो मेरे राम॥ अशरण…

॥ विनय के पद ॥

अन्तर्यामी एक तुम, आतम एक अपार।
जो नहिं पकड़ो बांह तो, कौन लगावे पार॥ १ ॥

मैं अपराधी जनम का, नख शिख भरे विचार।
तुम दाता दुःख-भंजना, मेरी करो संभार॥ २ ॥

औगुन किये तो बहु किये, करत न मानी हार।
भावैं बन्दा बखसिये, भावे गरदन मार॥ ३ ॥

अवगुन मेरे बाप जी, बख्श गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हूं, तऊ पिता को लाज॥ ४ ॥

न मैं किया न कर सकौं, न मैं करने जोग।
करन करावन और है, 'पलटू' कहते लोग॥ ५ ॥

तन यह मेरा मन यह तेरा, तेरा पिंड पिरान।
मैं हूं तेरा तू है मेरा ये 'पलटू' का ज्ञान॥ ६ ॥

तेरे प्रेम अगाध में, गद्गद् होकर मात।
रमन करूं तव गोद में, सब दिन सारी रात॥ ७ ॥

मेरे भीतर आय कर, करिए प्रभु निवास।
घर अपना कर लीजिए, निश्चित करके पास॥ ८ ॥

निरपच्छी के पच्छ तुम, निराधार आधार।
मेरे हो तुम हे प्रभो, जीवन प्राण अधार॥ ९ ॥

भक्ति दान मुझे दीजिए, गुरु देवन के देव।
और नहिं कुछ चाहिये, निस दिन तेरी सेव॥ १० ॥

तेरा हूँ मैं हे हरे ! तू मेरा गुरु राज।
तुझ मैं रमकर ही सभी, सुधरे बिगड़े काज ॥ ११ ॥

तू है जननी जगत की, जग मग ज्योति अनन्त।
तेरे सागर प्रेम का, पारावार न अन्त ॥ १२ ॥

तू है माता मधुमयी निज ममता कर दान।
मनो मोहक सुगीत गा, महिमा करूं बखान ॥ १३ ॥

स्नेह सने सुर सरस से, सरल भाव के साथ।
तुझे पुकारूं मात ! कह, ऊंचे करके हाथ ॥ १४ ॥

माता मुझे निहारिये, मिष्ट प्रेम के संग।
आशिष-कर को फेरिये, लेकर निज उत्संग ॥ १५ ॥

डगमगायें पैर मृदु, लचकें कोमल गात।
निज पथ पर कर पकड़ कर, ले चल मुझको मात ॥ १६ ॥

रोम रोम में तू रमे, मेरे मोहन राम।
अमृतमय शिव रूप तू है, मुद–मंगल–धाम ॥ १७ ॥

मो सम दीन न दीन हितु, तुम समान रघुवीर।
अस विचार रघुवंश मणि हरहु विषम भव पीर ॥ १८ ॥

कामिहिनारिपियारिजिमि. लोभिहिप्रियजिमदाम।
तिहुँ रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १९ ॥

अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति राम पद, यही वरदान न आन ॥ २० ॥

बार बार वर माँगहूँ, हर्ष देहु श्री रँग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग ॥ २१ ॥

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर।
तेरा तुझ को सौंपता, क्या लागे है मोर ॥ २२ ॥

मोरे सबहि एक तुम स्वामी । दीन बन्धु उर अन्तर्यामी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता । जाऊं कहां तजि पद जल जाता ॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे । कृपा निधान प्राण ते प्यारे ॥
मोरि सुधारिहि सोइ सब भांती । जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
अस विचार जाये जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति मोरे ॥
राम प्राण-प्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सब ही के ॥
मैं अबोध बालक बल हीना । राखहु शरण जानि जन दीना ॥

———

मालिक तूही रहे तेरी रजा रहे,
बाकी न मैं रहूं, न मेरी आरज़ू रहे।

तड़प इस बात की बाक़ी, न मैं होऊं न हो मेरा।
तुही तू बस तुही होवे, न हो मेरा न हो तेरा ॥

तुही तू, तुही तू, तुही तू, तुही है।
तुही है, तुही है, तुही है, तुही है॥
भीतर तुही है, बाहिर तुही है।
कण कण में रमता तुही तू तुही है॥

करन करावन आपै नाथ।
नानक के कछु नाहीं हाथ॥

जगती सुखी हों सर्वथा, नैरोग्य को पावें सभी।
नुभूतियां मंगलमयी हो न दुःखी होवें कभी॥
न रूँ कामना राज्य की, न स्वर्ग की अपवर्ग की।
देव! कामना दुखी जनों के, क्लेश के उत्सर्ग की॥

तेरी इच्छा पूर्ण हो मां,
सब विषय में, सब समय में।
सर्वथा परिपूर्ण हो, माँ,
तेरी इच्छा पूर्ण हो, माँ।
तन में मेरे, मन में मेरे,
बुद्धि में भी पूर्ण हो, मां।
तेरी इच्छा पूर्ण हो, मां,
आत्मा में, बाह्य जग में,
सर्वत्र ही परिपूर्ण हो, मां।
तेरी इच्छा पूर्ण हो, मां,

भजन

अब कैसे छूटे राम रट लागो !

प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी ।
जाकी अंग अंग बास समानी ॥

प्रभु जी, तुम धन-वन हम मोरा ।
जैसे चितवत चन्द चकोरा ॥

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती ।
जाकी ज्योति वरै दिन राती ॥

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ॥

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भगोत करें "रैंदासा" ॥

अपूर्णताओं से परे पूर्णत्व के शुभ-धाम में,
ले चलो, हे देव, हमको अज्ञता से ज्ञान में।

मरणधर्मा हम रहे न, अमर कर दो हे प्रभो,
सत्य दो,शुभज्योति दो,अमरत्व का शुभ दान दो ॥

ले चलो कल्याण-मग में, देव, तुम पथ रम्य से,
सब साधनों के बोध से सम्पन्न हो तुम हे हरे।

दूर करदो वक्रता अग्ने, जो हम में है सभी,
बार-बार बहु बार तुमको वन्दना हो अग्रणी ॥

मुझे भगवान वह दिल दे
कि जिसमें प्यार तेरा हो
जुवां वह दे जो करती हर समय इज़हार तेरा हो—
मुझे—...

मुझे वह बख्श दे आंखें
जिन्हें हो जुस्तजू तेरी
कि हर एक ज़र्रे २ में फ़क़त दीदार तेरा हो—
मुझे——

मुझे देना अगर संगत
तो देना अपने प्यारों की
भरोसा छोड़ दुनियां का जिन्हें एतवार तेरा हो—
मुझे......

मेरा साथी ज़माने में बनाना
उसको हे भगवान
दया हो जिसके दिल में और सेवादार तेरा हो—
मुझे——

यह प्रेमी काट ही लेगा
खुशी से जिन्दगी के दिन
मेरे सिर पर कृपा का हाथ गर करतार तेरा हो—
मुझे——

जीवन नैय्या भव सागर में बहती जाये प्रभु तेरे सहारे।
तुम ही रक्षक हो मेरे भगवन याचक आये हैं तेरे द्वारे॥

पाप की आंधी मन घबराये,
नैय्या में पानी भरता जाये।

ऐसी दशा में ऐ मेरे भगवन तुम ही इसके हो रखवारे॥ जीवन ···

विषयों में फंस कर प्रभु को भुलाया,
जीवन अपना व्यर्थ गंवाया।

अन्त में रोती हूँ मेरे भगवन बिगड़ी मेरी अब कौन संवारे॥ जीवन –

जीवन नैय्या डगमग डोले,
बीच भंवर खाए हिचकोले।

नाव पुरानी मैं अज्ञानी किश्ती लगा दो पार किनारे।
जीवन नैय्या भव सागर में बहती जाये प्रभु तेरे सहारे॥

कट जायेंगे बन्धन तेरे सभी· तू राम नाम गुण गायेजा।
अन्दर बैठे हैं राम तेरे, गा गा के उन्हें रिझाये जा॥

परवाह न कर दुख द्वन्दों की, यह आयेंगे और जायेंगे।
तन, मन, बुद्धि, दिल से उठ कर, तू आगे कदम बढ़ायेजा॥

कन्धा देगी शक्ति मैय्या, श्रद्धा विश्वास भी संग होंगे।
इन तीनों का तू संग किए, श्री दिव्य धाम को धाये जा॥

थक कर कदम गिरेगा जब, मैय्या आंचल फैला देगी।
तू बिना झिझक मां प्यारी के, आंचल में निज को लिटाये जा॥

जबां पर जब कभी - श्रद्धा से तेरा नाम आता है।
सुना है तेरी करुणां का - सहारा मिल ही जाता है।।

तुझे आवाज देते हैं,

जिन्हें विश्वास हैं तेरा।

कि चुप रहने से तेरी,

शान पर इलजाम आता है।।

घटाएं झूमती हैं,

रहमतों की तेरे बन्दों पर।

इशारे से तेरे सुख का,

सदा पैगाम आता है।।

दया करता है तू भगवन,

हमेशा अपने बन्दों पर।

तेरे दर का सवाली जो,

कभी खाली न जाता है।।

बादल के रंग को - तस्वीर बदल देते हैं,
कमां से निकला हुआ-तीर बदल देते हैं।
तुझ से मेरे आँसू भी न बदले गए ऐ मोहन,
बदलने वाले तो तकदीर बदल देते हैं।।

यह जोगिन की झोली, मेरे नाथ भर दो,

हूं दर पे भिखारी, दरस दान कर दो।

तुम्हें बल से पाऊं यह शक्ति नहीं है,

साधन नहीं है, भक्ति नहीं है।

तेरे बिना लौं लहकती नहीं है,

दयालू बने हो तो पीड़ा को हर लो॥ यह जोगिन…

है दावा तुम्हीं पर अदालत है तेरी,

यह तन मन है, रख लो जमानत है मेरी।

कर्म हैं यह मेरे औ रहमत है तेरी,

तुम्हीं हार मानों या दर्शन का वर दो।

इस पार कर दो या उस पार कर दो॥ यह…

नैंनों बिना ज्योति कैसे सुहाये,

वीणा बिना शब्द क्या लय सुनाए।

न मीरा बिना शाम अब रहने पाए,

इक बार आओगे इकरार कर लो।

इस पार कर दो या उस पार कर दो॥ यह…

ये तन मन जीवन सुलग उठे कोई ऐसी आग लगाए।
दिन दूनी हो विरह वेदना पल भर भी चैन न आए।।
ऐसी लौ हरि नाम की लागे,
रह न जाए मेरा नाम।
मन, वाणी से राम पुकारूं,
तन से हो भगवत का काम।
हरि का, हो वह ही रह जाए, और मेरा सब जल जाए,
यह तन ...
जीवन पथ पर थका राही,
मारग चला नहीं जाता।
एक तरफ जग, एक ओर प्रभू,
मुझसे चुना नहीं जाता।
हाथ पकड़ कोई मुझ अन्धे को, हरि की ओर झुकाए,
यह तन—...
मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं,
अभिमान, मान हर लो मेरा।
मैं प्रेम नगर का बाकी हूं,
गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा।
धरती के अम्बर पर मेरी राख बखेरी जाए रे,
यह तन ....
जीवन की हर डगर डगर में,
तुझे पुकारु दीना नाथ।
बड़े कठिन साधन से पाया,
अब न छोड़ू तेरा हाथ।
चाहे दुनिया, दो रंगी, निर्दोष को दोष लगाए रे,
यह तन...—

क्या कहूं क्या भक्त पाता,
हे प्रभू के ध्यान में।
कुछ अलौकिक रस मिले,
जब मन लगे भगवान में।
ज्ञान के प्रकाश से,
जब जगमगाता है हृदय।
रंग बिरंगे फूल खिलते,
इस आत्मिक उद्यान में।
संशयों का नाश होता,
पाप बन्धन के कटे।
साधना का मार्ग मिलता,
इस आत्मिक उत्थान में।
यूं लगे सर्वत्र ही,
आनन्द वर्षा हो रही।
भक्त जब भी मग्न होता,
राम के गुण गान में।

मुझ को है आस तेरी तू आसरा है मेरा।
तू आसरा है मेरा॥
तेरी याद में ही मेरा सांझ और सवेरा।
तू आसरा है मेरा॥

मैं रंक तू है राजा कैसे तुझे रिझाऊं
है कौन सी वो वस्तु जो साथ ले के आऊ
मिरा प्राणनाथ तू है हर प्राण गीत तेरा
हर प्राण गीत तेरा॥
मुझ को——
तेरी याद——

झीनी बदरिया छाई तेरा सन्देश लाई
विरह के राज्य में फिर बज उठी शहनाई
हृदय तन्त्री के स्वरों ने मीठा आलाप छेड़ा
मीठा आलाप छेड़ा॥
मुझ को——
तेरी याद——

मेरे रोम रोम अन्दर तेरी याद का है डेरा
उजड़ा है आशियां अब जंगल में है बसेरा
भटके पथिक का अब तो चरणों में है बसेरा
चरणों में है बसेरा॥
मुझ को——
तेरी याद——

संसार में जीवों पर आशा न रखा करना
जब कोई न हो अपना श्रीराम कहा करना
जीवन के समुद्र में तूफान भी आते हैं
जो उनके सहारे खुद आ के बचाते हैं
वो आप ही आवेगे तुम याद किया करना
जब कोई न हो अपना—
संसार—

दावा न जमा लेना यह देश बेगाना है
इस घर से तुझे प्राणी वापिस नहीं आना है
भगवान भी कहता है जीवों पे दया करना
जब कोई न हो अपना—
संसार—

ऐ भक्त न दुःख से रो तुझ से प्रभू दूर नहीं
भक्तों का दुःखी होना उसको मँजूर नहीं
वो आप ही आएगें तुम याद किया करना
जब कोई न हो अपना—
संसार—

हरि दर्शन को जन द्वार खड़ा;
प्रभू हां कर दो प्रभू हां कर दो।
सिर लिए पाप का भार खड़ा,
प्रभू हां कर दो हरि हां कर दो।
हरि दर्शन को···

तज तेरा द्वार कहां जाऊं, हे जगदाधार कहां जाऊं

युग युग किबाजी हार चला
प्रभू हां कर दो हरि हां कर दो
हरि दर्शन को जन द्वार खड़ा,
मैं दीन हीन जन दुखिहारा,
पथ भ्रष्ट गृहस्थ इक आवारा।
सब ओर से हो लाचार खड़ा,
प्रभू हाँ कर दो, हरि हां कर दो।
हरि दर्शन को -
उत आंगन में था अंधियारा,
इत मांगन आया उजियारा।
कोई अन्धा नैन पसार खड़ा,
प्रभू हां कर दो, हरि हां कर दो।
हरि दर्शन को जन द्वार खड़ा···
इक बार देख लो निर्मोही,
अपना ही जन ना हो कोई।
निर्दोष हुआ गुनाहगार खड़ा,
प्रभू हाँ कर दो, हरि हां कर दो।
हरि दर्शन को जन द्वार खड़ा।

हरी नाम जप ले प्यारे यह वक्त टल न जाए।
हाथों से यह सुनहरा मौका निकल न जाए॥
है पूर्ण उर बसे जो - पाया निधी रत्न तू।
कर ले भजन प्रभू का - पल यह भी टल न जाए॥
गफलत की नींद को तज - अब तो तू जाग भाई।
इन्सान क्या जो ठोकर - खाकर सम्भल न जाए॥
सुन्दर शरीर पा कर - अभिमान कर रहा तू।
कंचन सी तेरी काया - अग्नि में जल न जाए॥
लालच न कर तू भैया - कुछ भी नहीं है तेरा।
करते हो मेरा २ - यह उम्र ढल न जाए॥

बिगड़ी बनाने वाले बिगड़ी बना दो
नैया हमारी पार लगा दो
नैया हमारी तेरे हाथ में है
तू चाहे बना दे चाहे मिटा दे
नैया हमारी…

इधर भी हैं कांटे उधर भी हैं काँटे
तू चाहे तो कांटों को कलियां बना दे
नैया हमारी…

दीन दुखी का तू ही है वाली
तेरे दर पे हम भी हैं सवाली
धार कृपा की सब पर बरसादे
नैया हमारी…

जो भी आया बिक गया मालिक तेरे दरबार में।
फिर कुछ भी न रह गया बिकने में और खरीदार में ॥

एक नजरे करम नटवर जिस पे तेरी हो गई
उसको चिन्ता ही नहीं कोई भी इस संसार में

जो भी आया बिक गया—

जिसके दिल और आंख में मस्ती तुम्हारी छा गई
वह ही शोहरत पा गया इस प्रेम के बाजार में

जो भी आया...

कितना मीठा फल मिला है मोहन तेरी याद का
दुनियां के नाते सभी झूठे हैं तेरे प्यार में

जो भी आया...

गुणों को ठुकरा कर अवगुण को करते प्यार हैं
यही आदत है भली मेरे ही कृष्ण मुरार में

जो भी आया—

दुई का परदा उठा कर मिल गया करतार में
उसको फिर क्या गर्ज है दुनियां के झूठे प्यार में

जो भी आया बिक गया—

कितना है प्यारा नाम, तेरा जिस नाम से हमने काम लिया।

मुशकिल से हुई मुशकिल भी आसाँ, जिस वक्त प्रभु तेरा नाम लिया ॥

संसार सुमेरु की ठोकर से, यह जर्जर नैय्या डोल उठी
शोकातुर मन बोल उठा, हरि डूब चली, हरि डूब चली
पतवार पर आकर बैठ गये, मल्लाह बने और पार किया।

मुशकिल से हुई......

जब पाप की गठरी बोझ बनी, और मेरे पैर डगमगाने लगे,
गिरने न दिया करुणा निधि ने, गिरने से पहले थाम लिया।

कितना है प्यारा......

जब तेरे नशे में चूर हुए, हम इस दुनियां से दूर हुए,
जब तेरी इनायत हुई मुझ पर, तब तेरे नाम का जाम पिया।

कितना है प्यारा......

प्रभु तुम करुणा के सागर हो और करुणानिधी है नाम तेरा,
मैं हूं इक जर्रा इक मिट्टी का और तेरा दामन थाम लिया।

कितना है प्यारा......

एहसान तेरा होगा मुझ पर
यह काम मेरे सतगुर कर दे
इक बार बिठा कर चरणों में
अपने रंग में तन मन रंग दे
ओ छुपने वाले सामने आ
हंस हंस के दुई का परदा हटा
जो होश में अपने बैठे हैं
महफिल में उन्हें कातिल कर दे
परदे से लिपट तेरे मन्दिर के
दीवाने दुआ यह करते हैं
भक्तों के लिए दुनिया भर को
ऐ राम मेरे महफिल कर दे
ओ दुनिया के मालिक सुन ले जरा
मंझधार में नैया आन फंसी
मैं तुझ पर वारी जाऊं ठाकुर
तू उसको लबे साहिल कर दे
एहसान तेरा होगा मुझ पर···

भजन सूची

—

स्वामी रामानन्द जी महाराज का प्रकाशित साहित्य

नाम पुस्तक

१ आध्यात्मिक विकास
२ आध्यात्मिक साधन (प्रथम खण्ड)
३ आध्यात्मिक साधन (द्वितीय खण्ड)
४ जीवन रहस्य
५ [illegible]-दर्शन
६ [illegible] साधना
७ हमारी उपासना
८ हमारा साधना-व्यवहार
९ अशान्ति में
१० फूल व पत्तियाँ
११ दम्पति के लिए (उपहार योग्य)

अंग्रेजी साहित्य

1 As I Understond
2 Evolutionary Outlook
3 Evolutionary Spiritualism

साहित्य मिलने का पता:—

साधना कार्यालय बीसलपुर, (पीलीभीत)

किशोर प्रेस, बरेली में, साधना कार्यालय, बीसलपुर के लिए मुद्रित।